UNIVERSAL
LIBRARY
OU_178973
UNIVERSAL
LIBRARY

दिल्ली-रहस्य

मौलिक एवं ऐतिहासिक उपन्यास

प्रथम खण्ड

प्रथय भाग

देवीप्रसाद धवन 'विकल'

प्रकाशक :

सीता प्रकाशन

जनरलगंज, कानपुर ।

★

मूल्य १।)

★

मुद्रक ।
शम्भूनाथ भार्गव
सुधा प्रेस, कानपुर ।

अपनी बात

'दिल्ली-रहस्य' कोरा उपन्यास नहीं है, इसका आधारभूत इतिहास ही है। मुगल सम्राटों और राजकुमारों के जीवन की रंगीन कहानियां इतनी प्रचलित हैं कि उनमें से सत्य को ढूंढ़ निकालना कठिन ही कार्य है। किसी किंवदन्ती का आधार सत्य ही होता है; 'दिल्ली रहस्य' में वर्णित कथायें किम्बदन्तियां नहीं हैं किन्तु उससे कुछ अधिक है।

किसी भी स्थल पर इतिहास की अवहेलना करने की चेष्टा नहीं की गयी है। संवादों में भी मुगल-सभ्यता-सूचक भाषा का प्रयोग किया गया है। यदि यह उपन्यास पाठकों का पर्याप्त मनोरंजन कर सका तो अपना श्रम सफल समझूंगा।'

ग्रन्थकार

दिल्ली-रहस्य

प्रथम खण्ड

प्रथम भाग

[१ [

नगर के पश्चिम भाग की बस्ती में एक मकान है। इस मकान का एक कमरा साफ-सुथरा तथा साधारण ढंग से सजा हुआ है। इस समय एक अधेड़ स्त्री इसी कमरे में एक सोफे पर लेटी हुयी किसी चिन्ता मे निमग्न है। इसी स्त्री का नाम सफीना बीबी है।

सफीना की अवस्था इस समय लगभग चालीस वर्ष की होगी। वर्तमान सुन्दरता और नख-शिख को देख कर यह अनुमान भलीभांति लगाया जा सकता है कि सफीना जवानी मे गजब की सुन्दरी रही होगी। यद्यपि अब भी बनाव-शृंगार, सज-धज और वेश-भूषा से वह अपने सौंदर्य को रोक रखने के प्रयत्न में है किन्तु फिर भी उसकी अधेड़ावस्था स्पष्ट झलक ही उठती है। जिस समय वह जवानी की मस्ती में अपने तक को भूले हुयी थी, उस समय बड़े-बड़े राजकुमार, सेठ-साहूकार तथा उच्च पदाधिकारी उसके पास लुक-छिप कर जाते और दोनों हाथों से धन लुटा कर अपना जीवन सार्थक बनाते थे।

किन्तु सफीना वेश्या न थी। कहा जाता था कि वह उच्च परिवार की थी तथा जवानी ही में विधवा हो जाने के कारण जिस-तिस के कपड़ सिलकर अपना पेट भरती थी। धीरे-धीरे लोगों की दृष्टि उस पर गयी और सफीना उदार मनोवृत्ति के कारण किसी को अपने पास आने से रोक न सकी। छोटे लोगों का तो उसके निकट आने का साहस भी न हुआ किन्तु नगर के सुनाम धन्य लोगों में से कदाचित् ही ऐसा कोई हो जिसे सफीना से मिलने का सौभाग्य न हुआ हो।

फिर भी सफीना का दर्जीखाना चलता ही था। सच पूछो तो उन व्यक्तियों को आने का यह एक उत्तम साधन था जो जनता की दृष्टि में पूज्यनीय होकर अपने इस घृणापूर्ण जीवन के लिये केवल ईश्वर के सामने ही उत्तरदायी थे। कुछ दिनों बाद उसकी

दो भतीजियां (सफीना के कथनानुसार) भी अपनी बुआ के पास आ गयीं और कपड़ा सिलने का काम करने लगीं। इनमें बड़ी का नाम था सईदा और छोटी का हमीदा। लोगों का अनुमान था कि अपने सौंदर्य और यौवन को अस्ताचल की ओर जाते देख सफीना ने इन लड़कियों को घर की चहल-पहल अक्षुण्ण रखने के लिए बुलाकर रख लिया था।

आज सफीना कुछ चिंतित है। दिन में लगभग १२ बजे वह असाधारण रूप से अपना शृंगार करके सोफे पर आ बैठी थी किन्तु किसी कोप्रतीक्षा करते-करते वह ऊब कर सो गयी थी। अब इस समय पांच बज चुका था। तभी से वह कुछ चिंतित सी है।

सफ़ीना उठी और क़द-आदम शीशे के सामने खड़ी होकर अपना शृंगार और यौवन देखने लगी।

एकाएक उसके मुंह से निकला 'या खुदा, यह क्या ? बुढ़ापा तो दौड़ता चला आ रहा है।'

सफीना शीशे में अपने को देखकर कुछ सहम सी गयी थी। वह एक सांस लेकर फिर अपना नख-शिख शीशे में देखने लगी।

और तभी उसे शीशे में अपने पीछे खड़ी हुई एक छाया दिखलायी दी।

सफीना ने घूमकर उस व्यक्ति को देखा और डर जाने का सा अभिनय किया।

'उइ, मैं तो सचमुच डर गयी थी। सबेरे से हुजूर का रास्ता देखते देखते आंखें पथरा गयीं। आये तो आप इंशा अल्ला।' सफीना ने मुसकुरा कर कहा।

युवक, जिसकी अवस्था बीस वर्ष से अधिक न होगी, सफीना की कलाई पकड़ते हुए बोला 'बला की खूबसूरत आज तुम लग रही हो सफीना। तुम तो.....'

सफीना सुन्दरियों का सा हाव-भाव दिखलाती हुयी बोली 'अब बनाने लगे न हुजूर। अच्छा, आइये।'

वह हाथ पकड़ कर उसे सोफा के पास ले गयी और आदर के साथ बिठलाते हुये बोली 'पहिले हुजूर बतलायें कि इतनी देर क्यों हुयी ? खुदा जानता है कि मेरा तो बुरा हाल हो गया।'

युवक ने कहा 'किसी खास वजह से मैं कल आगरे से रात के पहिले रवाना न हो सका सफीना। अब्बाजान को तुम जानती ही हो, कितने सख्त हैं इस मामले में। मैं दिल्ली में रहना पसंद करता हूं, लेकिन वे मेरा आगरे से बाहर जाना कभी गवारा नहीं कर सकते।'

सफीना कुछ उदासी के साथ उसके मुंह की ओर देखने लगी। युवक हंस कर

बोला 'और इस मर्तबा तो एक खास काम से तुम्हारे पास आया हूं। उम्मीद है कि तुम समझ गयी होगी।'

कह कर युवक फिर मुसकुराया। सफीना मुसकुरा कर बोली 'समझ क्यों न जाऊंगी। अगर वह काम न होता तो क्या हुजूर इधर झांकते भी कभी ?'

युवक ने ताड़ लिया कि सफीना मन ही मन उसकी बातों का बुरा मान गयी है। झट सफीना को अपनी ओर खींचते हुये बोला 'आज तो तुम गजब ढा रही हो सफीना। सच कहता हूं कि आज तो तुम्हें देख कर मैं उस लड़की को भूल गया हूं जिसके पीछे इतनी जद्दोजहद के बाद आगरे से दिल्ली आया हूं।'

सफीना धीरे से युवक की गोद में लेट गयी और बोली 'क्या सच कह रहे हैं हुजूर ? मैं क्या सचमुच इतनी खूबसूरत हूं ?'

उसके कपोल पर धीरे से अपने ओठों को रखता हुआ युवक बोला 'तुम्हारी कसम सफीना, आज तो दिल काबू के बाहर हुआ जा रहा है।'

युवक ने चुम्बनों से सफीना के कपोल आरक्त कर दिए। अभी थोड़ी देर पहिले सफीना शीशे के सामने जिस उदासी का शिकार हो गयी थी उससे अब मुक्त हो चली थी। बुरी तरह युवक से चिपटती हुयी बोली 'मेरे हुजूर, मेरे सरकार—

युवक झट बोल उठा 'हुजूर और सरकार का यहां कुछ काम नहीं है सफीना। मैं नूर मुहम्मद हूं; मुझे नूर कह कर पुकारा करो।'

हंसती हुयी सफीना बोली 'ठीक है मेरे प्यारे नूर.....'

और तभी किसी ने द्वार पर थपकी दी। अपने को नूर मुहम्मद से अलग करती हुयी सफीना बोली 'आप भीतर के कमरे में चले जायं। मैं अभी फुरसत पा जाऊंगी।'

युवक नूर मुहम्मद इस समय मजे में था! उसे किसी का आना खल सा गया। यह चुपचाप बगल के कमरे में चला गया। यद्यपि यह कमरा शयन-कक्ष था, किन्तु फिर भी युवक किवाड़ के पीछे खड़े होकर आने वाले की बातें सुनने की चेष्टा करने लगा।

आने वाले का स्वर सुनायी दिया 'वाह, वाह, आज तो.....'

युवक ने अनुभव किया कि सफीना ने कदाचित् उसके मुंह पर हाथ रख दिया है।

इसके बाद युवक कुछ स्पष्ट रूप से सुन सका। बातों के स्थान पर फुसफुसाहट चल रही थी। नूर मुहम्मद के चेहरे पर बल पड़ गये थे।

अंत में 'चुम्बन' का स्वर सुनायी दिया। घृणा के साथ नूर मुहम्मद के मुंह से निकला 'जलील औरत! मैं भी क्या.....'

और—

हंसती हुयी सफीना अंदर घुस आयी। युवक ने अपने चेहरे का भाव फौरन बदल दिया। हंस कर बोला 'तुमने तो तरसा मारा सफीना।

सफीना चुपचाप युवक को पलंग के पास घसीट ले गयी और कामुकता के से भाव प्रदर्शित करते हुए बोली 'अब——'

तभी युवक बोल उठा 'अब लेटने का वक्त नहीं है सफीना। अगर हो सका तो रात में आ जाऊंगा। लेकिन (हंसकर) उस चिड़िया को तो फांस कर लाना ही होगा।'

और युवक ने फिर सफीना को चूम लिया। सफीना नखरे का भाव दिखलाती हुयी बोली 'जाइये मैं आपसे नहीं बोलती। दिन भर तो राह देखते देखते आंखें फूट गयीं——'

युवक अपने को संभाल चुका था। हंस कर बोला 'आज रात को आऊंगा, लेकिन उस लड़की.....'

सफीना शिकार को हाथ से निकलता हुआ देखकर बोली 'यह भी कोई कहने की बात है हुजूर। अल्लाह चाहेगा तो वह फंस कर ही रहेगी।'

थोड़ी देर तक युवक अपने प्रेमालाप से सफीना को प्रसन्न करता रहा और फिर घर से बाहर हो गया।

सड़क पर आकर उसके मुंह से निकला 'खूब बचा आज। मेरा दिल तो हाथ से निकल ही चुका था। बड़ी खौफनाक औरत है।

उधर सफीना सोफे पर बैठती हुयी बोली 'इन मर्दों का इश्क ऐसा ही होता है। अच्छी बात है, सफीना से बच कर कहां जायंगे ?'

[२]

दुलिया जवानी में भीग रही है। उसके इस मस्ती भरे यौवन की अंगड़ाइयों में वह गरम सांस छिपी हुयी है जिसे वह लज्जा, संकोच और अप्रकाशन की भावना से गोपनीय ही रखना चाहती है। उसका गौर वर्ण, सेवों की सी ललाई से चिटके हुए कपोल, आम की फांकों सी आंखें तथा अंग-प्रत्यंग की सुडौलता देखने वालों के दिलों पर एक कसकने वाला स्पंदन उत्पन्न कर देते हैं। इस यौवन के भार को एक अज्ञात अपराध सा समझ वह कुछ सिमटी सिमटी सी रहती है, प्रत्येक आंख वाले से डरती है तथा छिपकर—दोहरी होकर—आखों से ओझल हो जाती है। वह अंगड़ाई भरती है तो

घर के किसी सूने कोने में जाकर। उस समय वह दूसरों की आंख से अपने यौवन को देखती है, एक लम्बी सी सांस लेती है और अपने ही यौवन पर स्वयं मुग्ध होकर कह पड़ती है कि 'ओह ! अब क्या करूं ?'

किन्तु वह इस वरदान से धनी होकर भी अभिशापित है, क्योंकि वह एक निर्धन की कन्या है। उसका पिता शेरखां चुंगी के विभाग का एक साधारण सा कर्मचारी है। वह अपनी पुत्री को अच्छे से वस्त्र भी तो नहीं पहिना पाता। वह ऋण से लदा हुआ है क्योंकि उच्च वंश का होने के कारण उसे कुछ मर्यादा तो रखनी पड़ती ही है। उसके पूर्वज बाबर के साथ इस देश में आये थे, किन्तु दिल्ली में अपने वंश की उन्नति के सभी साधन समाप्त देखकर, शेरखां आगरे आकर बस गया था। उसने अपने अत्यन्त साधारण नागरिक जीवन को उच्च-वंश के मिथ्याभिमान में पड़कर अभिशापित बना लिया था।

उसके दो पुत्रियां थीं—दलिया और लतीफा। दलिया लतीफा से दो वर्ष बड़ी थी। दलिया भोली और लतीफा सुचतुरा थी। यद्यपि दोनों ही अपनी सुन्दरता से कामदेव को लज्जित करती थीं, फिर भी दलिया के यौवन को देख कर वह प्रसन्न हो उठता था किन्तु जब उसकी कल्पना उसके योग्य खाविंद की खोज करके खाली हाथ लौट आती तो उसकी आंखों की प्रसन्नता गरम होकर मुंह की राह से बाहर निकल जाती।

पास पड़ोस के मनचले युवकों की दृष्टि दलिया की ओर आकर्षित होने लगी थी। बहुतों ने इसी विषय को लेकर शेरखां से परिचय बढ़ाना चाहा, किन्तु उसे आवश्यकता से अधिक रूखा पाकर लोगों का साहस टूट गया। इसके अतिरिक्त दलिया का भी स्वभाव किसी से अधिक बात करने का न था।

शेरखां की स्थिति बिगड़ती गयी। लड़कियों की शादी के लिए वह परेशान तो था ही इधर उसकी नौकरी भी जाती रही। शेरखां घबड़ा उठा।

अफरोज खां उसका निकटतम मित्र था। उसकी अवस्था लगभग ४६ वर्ष की थी; वह मुगल-सम्राट अकबर के परिवार से अपने को संबन्धित बतलाता था। उसने शेरखां को दिल्ली जाकर नौकरी तलाश करने की सलाह दी। शेरखां पहिले तो लड़कियों को छोड़कर कहीं जाने के लिये राजी न हुआ किन्तु एक दिन वह बिना किसी से कहे-सुने न जाने किस ओर चला गया जो फिर लौट कर न आया।

पिता के इस प्रकार गायब हो जाने से दोनों ही बहुत घबड़ायीं किन्तु उन्होंने साहस से काम लिया। दलिया सुन्दरी होने के साथ ही साथ बुद्धिमती थी। उसने लतीफा को भी धीरज बंधाया।

अफरोज खां मौका पाकर शेरखां के घर में बेरोक-टोक आने लगा। पहिले तो

लड़कियों ने बात करने में बड़ा संकोच दिखलाया किन्तु बेबसी की दशा में वे कर ही क्या सकती थीं ? थोड़ा-बहुत सहारा उन्हें अफरोज खां का ही रह गया था। वह दलिया को बेटी कह कर पुकारता था और उसे यदा-कदा भावी जीवन के संबंध में उपदेश भी दे जाया करता था।

शिद्दत की गरमी पड़ रही है। पत्थर का बना हुआ नगर आगरा ग्रीष्म ऋतु में आग उगलने लगता है। शेरखां के मकान में एक छोटे से अव्यवस्थित कमरे के अन्दर दलिया और लतीफा चटाई पर लेटी हुयीं धीरे धीरे बात कर रही हैं।

लतीफा बोली 'अब्बाजान कभी हम लोगों को एक दिन भी अकेला छोड़ कर बाहर नहीं रहे। अबकी मरतबा तो.....'

और वह चुप हो गयी। दलिया का श्वेत संगमरमर का सा शरीर पसीने में डूबा हुआ था। गालों पर से भीगी लटों को हटायी हुयी वह बोली 'सचमुच अब्बाजान का इस तरह एकाएक गायब हो जाना निहायत ही परेशानी की बात है। मेरी तो (एक लम्बी सांस लेकर) समझ में ही नहीं आता कि क्या किया जाय ?'

लतीफा किंचित कुटिल स्वभाव की भी थी। बोली 'एक बात मेरे मन में रह-रह कर उठती है। कहीं अफरोज चचा का तो हाथ इसमें नहीं है।'

दलिया को यह बात कुछ पसंद न आयी। बोली 'न-न-न, वे बेचारे तो इस बात से खुद ही बड़े परेशान हैं। उन्हें क्या पड़ी थी.....'

लतीफा बोल उठी 'तू बड़ी भोली है बहिन। इस दुनिया के मक्रो-फेरब से तू बिल्कुल अनजान है। बिना मक्रो-फरेब के कोई भी इंसान तरक्की की सीढ़ी पर क़दम भी तो नहीं रख सकता।'

दलिया गौर से छोटी बहिन के मुंह की ओर देखती हुयी बोली 'यह तू क्या कह रही है लतीफा ? मक्रो-फरेब और ईमानदारी में उतना ही फर्क है जितना खुदा और शैतान में। अब्बाजान ने हमेशा हमको यही सिखलाया है। तू इतनी जल्दी उन्हें भूलने लगी ?'

लतीफा ताव में भर कर चटाई पर उठकर बैठ गयी और बोली 'रहने दे दलिया। दुनियां ईमानदारों के लिये नहीं है। मेरा तो नेकदिली, दयानतदारी ईमानदारी और इस तरह की तमाम बेकार की चीजों पर किसी भी तरह का एतक़ाद नहीं रहा।'

दलिया आश्चर्य से लतीफा का मुंह देखने लगी। लतीफा कहती गयी 'उस सोने को लेकर क्या किया जाय, जिससे कान फटते हों। तू ही देख दलिया, अब्बाजान ने क्या

क्या मुसीबतें नहीं झेलीं ? अगर वे चाहते तो सभी कुछ हो सकते थे। इससे उनका क्या बिगड़ा ? हम लोगों की जिन्दगी तो बरबाद कर दी उन्होंने।'

दलिया बोल उठी 'अब्बाजान ने हम लोगों की जिन्दगी बरबाद कर दी ? तू क्या बके चली जा रही है लतीफा ?'

स्फुट-स्वर में लतीफा बोली 'बेशक। बिगाड़ी नहीं तो क्या बनाकर रख गये हैं। मैं तुम्हीं से पूछती हूं कि आखिर अब तू क्या करेगी ? भीख मांगेगी ?

दलिया सोचने लगी 'लतीफा क्या ठीक ही कह रही है ? वाकई हम लोगों के पास अब भीख मांगने के सिवा है ही क्या ?'

लतीफा कहती गयी 'मुआफ करना बहिन, मैं अब्बाजान की तरह बेबकूफ नहीं हूं। मैं भी दुनिया में बहुत कुछ कर सकती हूं।

उसे गले से चिपटाती हुई दलिया बोली 'मेरी प्यारी लतीफा, सचमुच हम दोनों जिस परेशानी में पड़ गयी हैं उसमें सिवा भीख मांगने.....'

लतीफा स्फुट-स्वर में बोल उठी 'भीख तू मांग, मैं नहीं मांग सकती। हजारों ऊंचे मरतबे के आदमी, शाहजादे और शाहंशाह खुद मेरे दरवाजे पर भीख मांगने आयेंगे। मैं उस समय उन्हें ठोकरें लगाऊंगी और वे लोग गिड़गिड़ायेंगे।'

दलिया भोली थी। वह प्यार से लतीफा का हाथ पकड़ कर बोली 'तू बड़ी समझदार है लतीफा। मुझे तू ही बता कि मैं क्या करूं ?'

मन ही मन में प्रसन्न होकर लतीफा बोली 'मैं तुझे सब कुछ बताऊंगी लेकिन पहिले तू मेरे जिस्म पर हाथ रख कर कसम खा कि मैं जो कहूंगी वही तू करेगी।'

दलिया बहिन पर हाथ रख कर बोली 'मैं कुरान की कसम खाकर कहती हूं कि जो तू कहेगी वही मैं करूंगी।'

मुसकुरा कर लतीफा बोली 'तुम बड़ी अच्छी हो बहिन। हम लोग मिलकर आज रात को इस मसले पर गौर करके सोचेंगे कि हमको किस रास्ते जाना चाहिए ?'

दलिया ने कहा 'और अफरोज चचा.....'

लतीफा हंसती हुयी बोली 'झाड़ू मार अफरोज चचा पर। अगर हम कायदे और होशियारी के साथ चले तो खुद शाहजादा सलीम हमारी ड्योढ़ी पर पानी भरेंगे।'

दलिया आश्चर्य से लतीफा के मुंह की ओर देखने लगी।

लतीफा मुसकुराकर बोली 'अफरोज चचा को मैं खूब पहिचानती हूं। तुम भोली हो बहिन, तुम्हें दुनियां ठग सकती है लेकिन लतीफा को नहीं।'

[३]

दिल्ली का भी अपूर्व इतिहास है। बार बार लूटी जाने और अपने सीने पर रक्त की नदियों को धारण करने वाली दिल्ली सदा नया जीवन धारण करके नवयौवना सी इठलाती ही रही। रुधिर से सिक्त होकर ही सदा इसने अपना जामा बदला है। राजपूत, पठान, मुगल और अंग्रेज बारी-बारी से मुसकुराते हुये आये और अपना सब कुछ खोकर केवल इतिहास की सामिग्री मात्र बन कर रह गये।

शासकों की इस युद्ध-भूमि का गौरव केवल लड़ाइयों तक ही सीमित नहीं रहा। प्रभुत्व स्थापित हो जाने के बाद यह क्रीड़ा-भूमि भी रही है। किन्तु राजनैतिक महत्व के घटाटोप मे अब तक किसी ने यहां के राजाओं, शाहंशाहों और रानियों के व्यक्तिगत जीवन की रंगीन कहानियों की ओर न तो देखा और न प्रकाश ही डाला। इतिहासकारो का इन बातों से वास्तव मे कोई संबन्ध नहीं, इस-ओर तो कथाकारों की दृष्टि जानी चाहिये थी।

प्रत्येक राजा, राजकुमार, रानी और राजकुमारी के जीवन का एक व्यक्तिगत इतिहास है रंगीनियों और आमोद-प्रमोद मे डूबा हुआ जिसमे गोता लगाकर पाठक विभोर हो जाता है। आज हम जिस मनोरंजक कथा को सुविस्तृत रूप से प्रारंभ करने जा रहे हैं उसमें पाठक ऐतिहासिक सत्यता को खोजने का विफल प्रयास न करे क्योंकि इन घटनाओं से इतिहासकार का कोई संबंध नहीं है। यद्यपि ये घटनायें प्रमाणित न होते भी प्रमाणित हैं, ऐतिहासिक न होते हुए भी तथ्यहीन नहीं हैं, इनमें तो केवल कथाकार की लेखनी तथा उसके कौशल की ओर ही पाठक को अपना ध्यान केन्द्रित करना है।

दिल्ली के राजमहल का एक कमरा है। कदाचित् यह किसी राजकुमार का शयन-कक्ष ही है। इसकी सजावट में जिन वस्तुओं का प्रयोग किया गया है वे साधारण मूल्य की नहीं हैं। जड़ाऊ कुर्सियां, ऊँची कारीगरी के सुनहरे पलंग और बहुमूल्य झाड़-फ़ानूसों से कमरा आने-जाने वालों के हृदय में अपना सिक्का जमाता रहता है। फर्श पर बड़े-बड़े और खूबसूरत कालीन बिछे हुए हैं जिनकी कीमत लगा देना आसान काम नहीं है।

दीवारों पर बड़े - बड़े सुप्रसिद्ध चित्रकारों के बनाये हुए आकर्षक एवं कलापूर्ण चित्र सुनहरे फ्रेमों में मढ़े हुए लगे हैं जिन्हें देखकर वासना का सागर लहरे मारने लगता है। इनमें अधिकांश चित्र नग्न सुन्दरियों के हैं। यत्र - तत्र गोल तथा सुन्दर प्रकार की छोटी - छोटी तिपाइयां करीने से सजी हुयीं हैं जिनमें देश - विदेश के कारीगरों द्वारा तैयार की हुयी बड़ी बड़ी मूर्तियां रक्खी हुयी हैं जो काम - कला के साफल्य का दृश्य दर्शक

के हृदय में उतार देती हैं। मूर्तियां लगभग सभी स्त्रियों की हैं तथा नग्न हैं। कदाचित् काम - वासना का उद्दीपन ही इस प्रकार की मूर्तियों का लक्ष्य है।

इस समय कुर्सियों पर चार व्यक्ति विराजमान हैं तथा धीरे धीरे वार्तालाप चल रहा है।

सब से सुन्दर वस्त्रों में, जड़ाऊ कुर्सी पर विराजमान होने वाले, शाहंशाह अकबर के ज्येष्ठ पुत्र तथा भावी सम्राट शाहजादा सलीम हैं। उम्र लगभग बीस वर्ष की है तथा चेहरे से सज्जनता के साथ ही साथ विलासिता भी टपक रही है।

दूसरे सज्जन रशीद खां हैं। ये दिल्ली के सुप्रसिद्ध व्यापारी दाऊद खां के ज्येष्ट सुपुत्र हैं। शाहजादा सलीम के खास मित्रों में से हैं तथा रंगरेलियों में, पिता द्वारा अर्जित धन को दोनों हाथों से लुटाने में बड़े ही उदार हैं। उम्र अभी पच्चीस वर्ष से अधिक नहीं है।

तीसरे दिल्ली-स्थित सेना के अध्यक्ष क़ासिम खां के सुपुत्र हबीब खां हैं। ये भी शाहजादा सलीम के बल पर ही उनके साथ रह कर ऐयाशी करते हैं। सलीम को इनके बात चीत करन का ढंग बहुत पसंद है। इसके अतिरिक्त शाहज़ादा सलीम की इन पर कृपा भी रहती है क्योंकि ये महोदय शाहज़ादे की आज्ञा के गुलाम हैं।

चौथे सज्जन इस मंडली के विदूषक हैं। इनका नाम है फतेह खां। ये अव्वल दरजे के लम्पट भी हैं। पास में कौड़ी नहीं है किन्तु साथ सदैव धनी, रईसों और विलासिता में जकड़े हुए नये जवानों का ही रहता है। इन्हीं लोगों से पैसा पाकर इन्हीं के साथ विलासिता में लिप्त रहना ही इनका काम है। उम्र लगभग ४० वर्ष की है किन्तु पूछने पर सदा २५-३० ही बतलाते हैं।

चारों व्यक्ति परस्पर गहरे मित्र हैं तथा दिन-रात ऐयाशी की ही उधेड़-बुन में अपने समय का सदुपयोग करते रहते हैं।

शाहज़ादा सलीम ने धीरे से कहा 'यह काम फतेह खां के सिपुर्द किया जाय।'

रशीद खां बोल उठे 'वहां पहुंचना बड़ी टेढ़ी खीर है। फतेह खां ऐसे न जाने कितने दरवाजे पर ही एड़ियां रगड़ कर लौट आते हैं।'

फतेह खां अपने विषय में ऐसी बात सुनना ज़रा कम पसंद करते थे। बोल उठे 'फतेह खां को आपने मामूली आदमी समझ रक्खा है खां साहब। सिर्फ पैसा पास नहीं है वरना ऐसे-ऐसे करिश्मे दिखला सकता हूं कि आप दांत तले अंगुली दाब कर रह जांय।'

रशीद खां ने कह दिया 'लेकिन अभी तक कोई करिश्मा आपने दिखलाया नहीं फतेह खां साहब। आप जानते हैं कि पैसे की कोई कमी नहीं है फिर भी.....'

फतेह खां ताव में आकर बोले 'बस रहने दीजिये खां साहब। आप जैसा पैसा खर्च करते हैं मुझे अच्छी तरह मालूम है।'

रशीद खां बोल उठे 'पैसा खर्च करने से कौन सा काम नहीं हो सकता है ? आप बिना पैसे के ही कुछ करतूत करके दिखलायें तो पता चले.....'

बात काट कर बीच ही में फतेह खां ताव में भर कर बोले 'यहां पैसे के दम पर फतेह खां काम नहीं करते। आप तो पैसा खर्च करके भी इस तरह के काम को अंजाम नहीं दे सकते।'

मुंह मटका कर रशीद खां ने कहा 'ये सब मन समझाने की बातें हैं। बिना पैसा खर्च किए अगर आप इस काम को कर लायें तो मैं आपकी तारीफ समझूं।'

शाहज़ादा सलीम चुपचाप बैठे हुए मन ही मन दोनों की बातों का आनंद ले रहे थे। मुसकुरा कर बोले 'रशीद खां ठीक ही कहते हैं।'

फतेह खां रोनी सी सूरत बना कर बोले 'और मैं क्या ग़लत कह रहा हूं हुज़ूर ?'

सिर हिलाते हुए शाहज़ादे ने मुसकुरा कर कहा 'तुम भी ठीक कह रहे हो फतेह खां। बस इसी बात में दोनों की ताक़त का इम्तिहान हो जाना चाहिए।'

फतेह खां फौरन बोल उठे 'मुझे मंज़ूर है।'

कुछ सोच कर रशीद खां ने कहा 'मुझे भी मंज़ूर है।'

शाहज़ादा सलीम ने कहा 'तो यह तय रहा कि दोनों ही इस काम में कामयाबी लाने की कोशिश करेंगे। इसके लिए दोनों ही को पन्द्रह-पद्रह दिन का वक़्त दिया जायगा। पहिले रशीद खां कोशिश करेंगे।

कुछ सोच कर रशीद खां ने कहा 'मंज़ूर।'

शाहज़ादे सलीम ने कहा 'यह भी एक लुत्फ की बात रहेगी। रशीद खां अगर अपनी कोशिशों में नाकामयाब रहे तो फतेह खां को मौक़ा दिया जायगा। और अगर दोनों ही नाकामयाब रहे तो—

कह कर मुसकुराते हुए शाहज़ादे ने हबीब खां की ओर देखा।

हबीब खां बोल उठे 'अच्छी बात है। इनके बाद मेरी बारी आयेगी।'

शाहज़ादे ने मुसकुराते हुये कहा 'अगर तुम तीनों नाकामयाब रहे तो फिर मेरी बारी आजायगी। मैं भी कोशिश करके देखूंगा कि.....'

तीनों बोल उठे 'ठीक, बिलकुल ठीक।'

बाज़ी बद गयी। शाहज़ादे ने कहा 'बस, फतेह खां का काम आज ही से शुरू हो जायगा। देखना है किसे कामयाबी हासिल होती है।'

फतेह खां चुप बैठे थे।

शाहजादे सलीम ने कहा 'लेकिन तुम में से हरेक मुझको सारी कार्रवाई की इत्तिला देता रहेगा। ऐसा न हो कि हमारी आपसी बदा - बदी में चिड़िया हाथ से निकल जाय।'

थोड़ी देर में रशीद खां और हबीब खां उठकर चले गये। उनके जाने के बाद शाहजादे सलीम ने कहा 'तुम घबड़ाना मत फतेह खां। तुम्हें मैं अपना ही आदमी समझता हूँ। जिस तरह की मदद की जरूरत तुम्हें पड़ेगी मैं दूंगा।'

कहते हुए शाहजादे ने एक छोटी सी थैली फतेह खां के हाथों में पकड़ा दी।

फतेह खां प्रसन्न होकर बोला 'हुजूर का तो सहारा ही है। मैं देखता हूं कि मुझे कामयाबी जरूर हासिल होगी। हुजूर ही के लिये ही तो मैं यह सब करने जा ही रहा हूं।'

शाहजादा सलीम मुसकुराकर चुप हो गये।

चलते वक़्त फतेह खां ने कहा 'मैं दो - एक दिन में ही हुजूर की खिदमत में हाजिर होकर.....'

शाहजादा सलीम बोल उठे 'हां - हां, सब ठीक है। आप अपना काम कीजिये।'

फतेह खां चला गया।

सबके चले जाने के पश्चात् शाहजादा सलीम के मुंह से निकला 'बेवकूफ़ कहीं के! रुपया और अक्ल की ताक़त पर फूलते फिरते हैं! मैं इन्हें दिखलाऊँगा कि लोग मरतबा और तरक़्क़ी के लिये अपना सब कुछ कुरबान करने के लिये तैयार रहते हैं।'

शाहजादे ने घंटी बजा दी। निहायत अदा के साथ नौकर ने उपस्थित होकर अभिवादन किया। शाहजादे ने कहा 'कादिर खां को हाजिर करो।'

नौकर सिर झुका कर चला गया। शाहजादे ने सोने के जड़ाऊ डिब्बे से दो बीड़े पान निकाल कर मुंह में रख लिये और कहने लगा 'दुनियां में ऐशो-आराम के लिये ही सलीम पैदा हुआ है। इसके बिना जिन्दगी भी कोई जिन्दगी है?'

थोड़ी देर बाद एक लम्बे - चौड़े अधेड़ उम्र के व्यक्ति ने आकर अभिवादन किया।

शाहजादे ने मुसकुरा कर कहा 'तुम्हारी इस वक्त मुझे जरूरत है कादिर खां।'

लम्बा आदाब बजाते हुए कादिर खां ने कहा 'बन्दा हाजिर है। हुजूर हुक्म फरमावें।'

शाहजादे ने कहा 'मुझे अफ़रोज़ मियां की जरूरत है। उन्हें लाकर हाजिर करो।'

कादिर ने अदब के साथ कहा 'मगर हुजूर, अफरोज मियां शायद आगरे में.....'

शाहजादा सलीम बीच ही में बोल उठा 'नहीं, वे मुझसे पहिले ही दिल्ली आगये हैं। फौरन पता लगा कर हाजिर करो।'

'जी हुकुम' कहकर कादिर खां चले गये।
शाहज़ादा पैर फैलाकर आराम से सोफे पर आकर लेट गया।
साक़ी को आज्ञा हुयी और मदिरा के जाम पर जाम चलने लगे।

[४]

दिल्ली के दक्षिण भाग की ओर जहां पर बड़े-बड़े धनिकों और व्यापारियों की ऊंची-ऊंची अट्टालिकायें हैं, वहीं पर कुछ दिनों से एक नवीन अट्टालिका में कुछ नये किरायेदार आकर बस गये हैं। इस अट्टालिका के कमरे ऊंचे पैमाने पर सजे हुये हैं तथा इनकी मालिक एक स्त्री है। इस स्त्री का नाम रज़िया है।

रज़िया ग़ज़ब की सुन्दरी है; ऐसा प्रतीत होता है कि विधाता ने स्वयं अपने हाथों से इसे सुरुचि के साथ गढ़ा है। अंग-प्रत्यंग सांचे में ढला सा है; सुन्दर गौर वर्ण की यह संगमरमर की प्रस्तर मूर्ति सी बरबस अपनी ओर सभी को खींच लेती है। उम्र भी १९-२० वर्ष से अधिक न होगी। चेहरे पर लावण्य-प्रभा के साथ ही साथ कुमारिकाओं की सी लज्जा है। उसकी आखों की मादकता साक्षात् मदिरा ही के समान थी, जिसे पीते ही मनुष्य सब कुछ खो देता है—भूल जाता है—केवल मदिरा ही को याद रख कर। रज़िया साक्षात् मदिरा ही सी है—अत्यंत मादक, न भूल सकी जाने वाली और प्राणों से प्रिय।

इस समय सोफ़े पर लेटी हुयी रज़िया साक्षात् अलकापुरी की रानी सी लग रही है। सफेद सलवार पर काला दुपट्टा खिलकर रह गया है। नितम्बों तक नागिन सी झूलती हुयी काली वेणी नाग-पाश सी हृदय को बंदी बना लेने में अपने चातुर्य पर मुसकुरा रही है। सामने एक मेज पर चांदी का पानदान रक्खा हुआ है जो मखमली कपड़े के सुन्दर से आवरण से ढका हुआ है।

तभी नौकर ने आकर सूचना दी 'हुज़ूर से कोई मिलना चाहता है।'

रज़िया थोड़ी देर तक कुछ सोचती रही, फिर कोमल-स्वर में बोली 'बुला ला।'

नौकर के चले जाने के बाद रज़िया ने एक लम्बी सांस ली और संभल कर सोफ पर बैठ गयी।

आगन्तुक के आते ही रज़िया ने उठकर अभिवादन किया तथा मुसकुरा कर मीठे-स्वर में कहा—'हुज़ूर के मिजाज़ तो ठीक है ?'

आगन्तुक मुसकुरा कर सोफ़े के सामने वाली कुर्सी पर बैठ गया और बोला 'वाह, आपके बारे में जैसा सुना था वैसा ही पाया। आप अच्छी तरह से हैं न ?'

रजिया मुसकुराकर बोली 'जी हां, आपकी नवाजिश और खुदा का शुक्र है। अगर हर्ज न हो तो अपना इस्म मुबारक बतलाने की तकलीफ करें।'

आगन्तुक मुसकुरा कर थोड़ी देर तक चुप रहा फिर बोला 'बन्दे को फतेह खां कहते हैं। फौजी सालार जनाब क़ासिम खां मेरे वालिद हैं। यही या और कुछ ?'

हंसती हुयी रजिया बोली 'तकलीफ के लिए मुआफी की ख्वास्तगार हूं। जहे किस्मत जो आपके क़दम मुबारक इस तरफ तशरीफ लाये। मैं आपकी क्या खिदमत कर सकती हूं ?'

फतेह खां वास्तव में रजिया की सुन्दरता और उसका भोलापन देख कर उस पर लट्टू हुआ जा रहा था। बोला 'आप जन्नत की परी हैं। आपको देख कर, खुदा जानता है, तबियत.....'

रजिया जरा गंभीर होकर बोल उठी 'इस तारीफ़ के लिए मैं आपका शुक्रिया अदा करती हूं,, अब आप यह फरमायें कि आप किसलिये तशरीफ़ लाये हैं और मैं आपकी क्या खिदमत कर सकती हूं।'

फतेह खां मुसकुरा कर बोला 'मैं आपको खुश करने की नीयत से आया हूं हुस्न की परी। मैं यह देख कर बड़ा खुश हूं कि आपने कितनी ऊंची तबियत पायी है.....'

रजिया मुसकुराती हुयी बोली 'यह तो सिर्फ मेरी तारीफ़ ही तारीफ़ हुयी.....'

फतेह खां बीच ही में कह पड़ा 'और मैं हलफिया कहता हूं कि जो तारीफ़ मैंने आपकी की है वह हुरूफ-ब-हुरूफ सच है। आपके लिए जीना और मरना दोनों ही फ़ख्र की बात है।'

हँसती हुयी रजिया ने कहा 'मगर जनाब मैं यह नहीं चाहती कि मेरे लिये कोई अपनी जान दे। आप अपना.....'

बड़ी आजिजी की मुद्रा में फतेह खां बोला 'तो हुजूर, मुझे अपने लिये जरूर जीनें और मरने की इजाजत दें।'

भवों पर बल डालते हुये किंचित क्रोध के साथ रजिया ने कहा 'जनाब, मैं आपका मतलब नहीं समझी।'

फतेह खां खड़ा हो गया और बोला 'आप खुद जानती हैं कि आप कितनी खूबसूरत हैं। खूबसूरती में एक कशिश होती है। अब शायद आप मेरा मतलब समझ गयी होंगी।'

रजिया सब कुछ समझ गयी थी। उसके उस्ताद ने उसे सभी प्रकार के अभ्यास करा दिये थे। वह तब तक खुलना न चाहती थी जब तक फतेह खां के मुंह से उसका मतलब स्पष्ट रूप से न कहलवा ले।

फतेह खां चलता हुआ व्यक्ति था। रजिया पर आंख गड़ाकर बोला 'अब शायद आप मेरा मतलब समझ गयी होंगी।'

रजिया बोल उठी 'आप ऊंचे मरतबे के इंसान हैं। मेरे लिये यह गुस्ताखी की बात होगी कि मैं आपकी बात न सुनूं। आप साफ साफ कहिए न ?'

फतेह खां बोला 'मुझे यह पता न था कि आप मेरे आने की कैफियत इस तरह तलब करने लगेंगी, फिर भी.....'

रजिया फतेह खां की बातों से कुछ ऊब सी उठी थी, बोली 'आपको जो कुछ कहना है जल्दी कह जाइये।'

फतेह खां धीरे से बोला 'आप जब से दिल्ली में तशरीफ़ लाई हैं.....'

कुछ आश्चर्य सा प्रकट करते हुए रजिया ने फौरन कहा 'आप ये सब क्या कह रहे हैं ? मैं तो दिल्ली ही में पैदा हुयी और पली हूं।'

चालाकी से बात बनाते हुये फतेह खां बोल उठा 'इसमें कोई शक नहीं कि आप यहीं दिल्ली में पैदा हुयी और पली हैं। लेकिन हम लोग तो आपको कुछ हफ्तों ही से जानते हैं।'

रजिया बोल उठी 'हम लोग' से आपका क्या मतलब है ?'

फतेह खां चालाकी से बोल उठा 'हम लोग से मतलब उन इंसानों से है जो दिल रखते हैं और दिल वाले को पहिचानते हैं।' हम लोगों ने यह महसूस किया है कि आप जिस जगह में रहती हैं वह आप जैसी खूबसूरत और वजहदार हुस्न की परियों के रहने लायक जगह नहीं है। आप तो महलों में रहने लायक हैं। जिस वक़्त से हम लोगों ने आपको देखा है आपकी शक्ल हम लोगों के दिलों पर नक़्श हो गयी है। हम लोग.....'

उसकी लम्बी-चौड़ी बातों से ऊब कर रजिया बोली 'आने की कैफ़ियत देने के बहाने आप न जाने क्या क्या बेतुकी बातें कहे चले जा रहे हैं। ये सब बेबुनियाद और बेसिर पैर की बातें हैं। अब आप इस मुलाकात को खत्म समझें। इस बेअदबी के लिये मुआफ़ फरमाइयेगा।'

कह कर रजिया अन्दर जाने के लिए उठ खड़ी हुयी।

फतेह खां बाजी हाथ से जाती देख कुछ गिड़गिड़ाकर बोला 'खुदा के लिये ऐसा न कीजिये। जरा ठहर कर मेरी बात तो.....'

सोफे में बैठती हुयी रजिया बोली 'तो फिर जो कुछ कहना है साफ-साफ कहिये।'

फतेह खां की हक्की-बक्की भूल गयी थी। वह हड़बड़ा कर बोला 'मैं आपसे हार

मानता हूं परी। आप मेरे ऊपर रहम करें। मैं आपकी खूबसूरती और जवानी देख कर हक्का-बक्का रह गया हूं।'

कह कर फतेह खां बड़े विनीत भाव से सुन्दरी के सामने घुटनों के बल बैठ गये।

रजिया उसकी इस मुद्रा पर मन ही मन हंस पड़ी। उसके बिम्बाधरों और रसीली आंखों से भी यह भाव प्रकट होने लगा।

फतेह खां समझा कि बाजी मार ली। झट बोले 'ऐ हुस्न की मलिका, मैं तेरा जर-खरीद गुलाम हूं।'

रजिया वहां से अपने को कुछ अलग करती हुयी बोली 'लेकिन आप कुछ खुलासा कहें भी तो ?'

फतेह खां को बल मिल गया। वह बोला 'आप इस वक्त बतौर मुंसिफ के हैं, मेरी किस्मत का फैसला आपके हाथ है.....'

हंस कर रजिया बोली 'आप फिर शायरी करने लगे। मैं कहती हूं कि आप साफ साफ क्यों नहीं कहते कि आप क्या चाहते हैं ?'

फतेह खां अब जरा गंभीर होकर बोला 'क्या आप अब तक नहीं समझीं कि मैं क्या चाहता हूं ? ताज्जुब है।'

रजिया मुसकुरा कर बोली 'मैं जो कुछ समझी हूं शायद वह बात न हो तब ?'

फतेह खां को कामयाबी की उम्मीद हो चली थी। बोला 'आप जो कुछ समझी हों फौरन कह डालने की मेहरबानी करें।'

रजिया क्षण भर चुप रह कर बोली 'शायद आप शादी का पैग़ाम लेकर आये हैं। यही न ?'

एक दम सीधा खड़ा होकर आश्चर्य की मुद्रा में फतेह खां बोला 'शादी ? शायद आपने मेरी बात का मतलब नहीं समझा।'

रजिया बोल उठी 'अभी आप मेरी खूबसूरती की तारीफ कर रहे थे और यह भी जाहिर कर रहे थे कि आप मेरे लिए मरना और जीना चाहते हैं, तो फिर, सिवाय शादी के और कोई बात ही क्या हो सकती है।'

फतेह खां बोला 'इस मनहूस चीज से जिसका नाम 'शादी' है हम लोग हमेशा बहुत दूर रहते हैं मेरी परी।'

कड़क कर रजिया बोली 'तो फिर इन सब बातों से आप का क्या मतलब है ? जल्दी खुलासा कीजिय वरना यहां से तशरीफ ले जाइये।'

फतेह खां रोनी सी सूरत बनाकर बोला 'शादी तो हम लोगों की न जाने कब हो चुकी है। आपको सुनकर अफ़सोस होगा कि जिससे मेरी शादी हुयी है उसे में बिल्कुल प्यार नहीं करता। तभी तो.....तभी तो.....'

रजिया ने स्फुट-स्वर से कहा 'आप शादी करना चाहते हैं या नहीं ? 'हां' या 'ना' में फौरन जवाब दीजिये।'

लम्पट फतेह खां किंचित घबड़ाकर बोला 'यह आप क्या कह रही हैं ? शादी तो... शादी तो.....'

रजिया क्रोध के स्वर में बोली 'मैं कहती हूँ कि 'हां' या 'ना' फौरन जबाब दीजिये।'

फतेह खां परेशान होता हुआ बोला 'हां...ना...हां...ना'

रजिया ने तिरस्कार के स्वर में कहा 'तो फिर आप फौरन निकल जाइये यहां से। आप जाते हैं या.....'

और उसने किसी को बुलाने का अभिनय किया।

फतेह खां चुपचाप घर से बाहर हो गया।

[५]

प्रत्येक बात की एक सीमा होती है; जब हम जवानी की उमंग में अपने को डूबा पाते हैं तो इस नशे में हम कभी कल्पना भी नहीं कर सकते कि बहार के दिन तो चार ही होते हैं। उस समय हम इतने अंधे हो जाते हैं कि सोचते ही नहीं कि इस वर्तमान पूंजी से ही भविष्य की नौका पार करना है। यह स्वाभाविक और क्षम्य भी है क्योंकि जवानी का नशा ही ऐसा होता है। उस समय भले-बुरे, अच्छाई-बुराई, ऊँच-नीच और भूत - भविष्य में कुछ अन्तर मालूम ही नहीं पड़ता। इस नशे में एक विचित्र प्रकार का ग़ुरूर, अहंकार या अहमन्यता का भाव छिपा रहता है जो हमको कभी झुक कर यह सोचने का अवसर नहीं देता कि एक दिन यह जवानी न रहेगी और उस समय हमको प्रत्येक के मुंह की ओर देखना पड़ेगा।

आज यही हाल सफीना बीबी का है। उस दिन नूर मुहम्मद जो उसे ठुकराकर चला गया उससे उसके दिल में एक ठेस-सी लगी है। एक दिन यही नूर मुहम्मद उसके प्रेम का भिखारी बना हुआ उसके चरणों पर लोटा करता था। उस दिन के नूर मुहम्मद के व्यवहार से उसका हृदय अपमान, क्षोभ और दुःख से भर गया था। उसका हृदय कभी कभी प्रतिहिंसाग्नि से भी भर जाता था किन्तु वह जानती थी कि नूर मुहम्मद उस श्रेणी का व्यक्ति है जिसका वह कुछ बिगाड़ नहीं सकती।

अब उसका दर्जीखाना भी पहिले की तरह नहीं चलता। उसकी दोनों भतीजियां प्रेम के खेल में बिलकुल असफल ही सिद्ध हुयीं। दोनों ही थोड़े दिनों के अन्दर अपने अपने प्रेमियों के साथ घर बसा बैठीं। सफीना बीबी अंत में घाटे ही में रहीं।

संध्या का झुटपुटा समय है। अभी - अभी पानी बरस चुका है। सड़कों पर टिमटिमाते हुए लैम्प केवल सवारियों को मार्ग दिखलाने भर का प्रकाश उँडेल कर अपने अस्तित्व की शालीनता पर अकड़े खड़े हुए थे। जाड़े की रातें जब बरसात से भीगती हैं तो संध्या ही से सड़कों पर सन्नाटा छाने लगता है। पानी बरस जाने से सर्दी भी बढ़ गयी है।

संध्या गाढ़ी हो चली और अंधकार नगर को निगलने लगा। नागरिक घरों की ओर चल पड़े थे। कृष्ण पक्ष का चांद अमावस्या की गोद में मुंह छिपाये पड़ा था।

इस समय हम नगर के उस भाग की ओर चल रहे हैं जहां विशेष रूप से सन्नाटा है। यह वह स्थान है जहां से सीधी सड़क काश्मीर की ओर गयी है। प्रायः इस स्थान पर आबादी होते हुए भी सन्नाटा रहता है, क्योंकि यहां विशेषतौर से मकान ही हैं किसी प्रकार का बाज़ार नहीं है।

इस समय एक बंद घोड़ा-गाड़ी धीमी चाल से एक ओर चली जा रही है। गाड़ी और उसमें जुते हुये घोड़ों को देखकर सहज ही में अनुमान लगाया जा सकता है कि यह किसी साधारण नागरिक की नहीं है। गाड़ी हांकने वाला भी बहुमूल्य वर्दी पहिने हुए है।

सहसा गाड़ी रुक गयी। अंदर बैठे हुए व्यक्ति ने सिर निकाल कर हांकने वाले से कहा 'यह आवाज कैसी आ रही है मुबारक ?'

हांकने वाला फौरन नीचे उतर आया और अदब के साथ अभिवादन करके बोला 'किसी औरत के चिल्लाने की आवाज सी मालूम पड़ रही है सरकार।'

'गाड़ी आगे बढ़ाओ' आज्ञा के तौर पर मालिक ने कहा।

गाड़ी वेग से आगे बढ़ी। थोड़ी दूर पर ही दो बदमाश किसी स्त्री को ज़बरदस्ती उठा कर ले जाने के प्रयत्न में थे। स्त्री मचल कर छूटने की चेष्टा में थी तथा रह-रह कर सहायता के लिये चिल्ला उठती थी। निकट पहुंच कर सवार ने गाड़ी वाले से कहा 'रोक दो।'

गाड़ी रुकते ही सवार झट नीचे उतर पड़ा। उसने कमर में हाथ लगाकर अपनी छोटी सी लटकती हुई तलवार देख ली।

बदमाशों ने सवार को अपनी ओर आते देखा, किन्तु उसे अकेला देख कर वे मुकाबिला करने के लिए तैयार हो गये। उनमें से एक ने कस कर औरत का हाथ पकड़

लिया था। औरत ने भी जल्दी-जल्दी सांसें लेते हुये अपना बुरका संभाल लिया।

सवार ने कड़क कर कहा 'छोड़ दे इस औरत को।'

दोनों बदमाश चुपचाप खड़े सवार के निकट आने की प्रतीक्षा करने लगे।

एक ने दूसरे से कहा 'जरा नजदीक आ जाने दो, फिर इसे सीधा जहन्नुम का रास्ता दिखलाऊं।'

सवार निर्भीक भाव से उनके बिल्कुल समीप आ गया। दोनों बदमाश उस पर झपटे। औरत एक कोने में खड़ी हुयी चीख मार उठी।

सवार ने झट तलवार निकाल ली। एकाएक उनमें से एक बदमाश के मुंह से निकला 'हैं, आप !'

दूसरे ने भी गौर से सवार के मुंह की ओर देखा। दोनों एकदम भाग खड़े हुये। सवार आश्चर्य के साथ देखता रह गया।

औरत का कांपना अब कम हुआ। सवार ने उसके निकट आकर कहा 'आप कौन हैं ?'

औरत चुपचाप खड़ी रही। सवार कुछ सोच कर बोला 'मैं आपके घर तो पहुंचा नहीं सकता। आप मेरे साथ चलें मैं आपको किसी अपने खास आदमी के साथ भिजवाने की कोशिश करूंगा। उम्मीद है कि आपको मेरे साथ चलने में कोई एतराज न होगा।'

अब औरत का मुंह खुला 'अच्छी बात है।'

सवार उस स्त्री को साथ लेकर गाड़ी में बैठ गया। स्त्री बुरक़े में ढकी हुयी थी, अतएव सवार ने अब तक उसका मुंह भी न देखा था।

दोनों चुपचाप बैठ गये। सवार ने कोचवान को आज्ञा दी। 'लौट चलो।'

गाड़ी जिधर से आयी थी उधर ही मुड़ गयी।

सवार चुपचाप बैठे बैठे उस स्त्री के रूप और उसकी अवस्था का अंदाजा लगाता रहा, किन्तु कुछ भी जान न सका।

अगले चौराहे पर पहुंच सवार ने कहा 'दाहिनी ओर मोड़ो।'

गाड़ी उधर ही मुड़ गयी।

एक साधारण किन्तु साफ-सुथरे मकान के पास पहुंच कर सवार ने कहा 'रोक दो।'

गाड़ी रुक गयी। सवार ने स्त्री को लक्ष्य करके कहा 'उतरिये।'

स्त्री चुपचाप नीचे उतर गयी। सवार उसे लेकर घर के अंदर चला गया।

कमरे में पहुंच कर उसने दीवार पर टंगी हुयी घंटी उतार कर बजायी। फौरन नौकर आ गया।

वह अत्यन्त शिष्टाचार के साथ बोला 'बैठिये हुजूर।'

सवार एक कुर्सी पर बैठ गया। स्त्री भी बैठ गयी।

नौकर को खड़े रहते देख सवार बोला 'मालकिन हैं ?'

नौकर फौरन बोल उठा 'जी हुजूर। क्या खबर करूं ?'

'हां' सवार ने कहा।

नौकर चला गया। कमरे में बत्तियों के प्रकाश में सवार ने स्त्री की ओर फिर ग़ौर से देखा बुरक़े में चमकती हुई दो बड़ी-बड़ी काली आंखें उसी की ओर देख रही थीं।

सवार धीरे से कहने लगा 'अब आज तो आपका अपने घर पहुंचना मुश्किल ही सा है। आज आपके रहने का इन्तिजाम किये देता हूं। कल अपने घर पहुंच जायंगी।'

कुछ देर चुप रह कर स्त्री ने उत्तर दिया 'अच्छी बात है।'

ग़जब का मधुर स्वर है। सवार सुन्दरी के सौन्दर्य की छवि देखने के लिये तड़प उठा।

और तभी कदाचित् उस घर की मालकिन आकर खड़ी हो गयी। सवार को देखते ही वह बड़े अदब के साथ बोल उठी 'ओह, आप इस वक्त हुजूर ? और वे.....'

स्त्री की ओर उसने देखा और चुप हो गयी। चेहरे पर किंचित सा हास्य खचित करते हुए सवार ने कहा 'इन्हें मैं खुद नहीं जानता हूं सफ़ीना। रास्ते में कुछ बदमाशों के चंगुल में ये फंस गयी थीं। मैं मौक़े से आ गया था। आज रात में ये तुम्हारे यहां ही रहेंगी। कल इन्हें इनके घर भिजवा दूंगा।'

चेहरे पर एक कुटिलता भरी मुसकुराहट लाते हुए सफ़ीना बोली 'हां-हां शौक़ से रह सकती हैं।'

क्षण भर चुप रह कर सवार बोला 'ये बहुत परेशान हैं, इन्हें अन्दर आराम करने के लिये पहुंचा दो। मैं एक प्याला चाय का लूंगा।'

'अच्छा सरकार' कह कर सफ़ीना उस स्त्री को लेकर अन्दर चली गयी। सवार बैठा रहा।

थोड़ी देर में सफ़ीना बाहर लौट आयी।

हंस कर सवार ने कहा 'ठीक रहा ?'

सफ़ीना बड़े नाजो-अन्दाज के साथ बोली 'हुजूर भला.....'

उसके मुंह पर प्रेम से हाथ रखते हुए सवार ने कहा 'चुप, चुप मैं जा रहा हूं सफ़ीना। घंटे भर में लौट कर आ जाऊंगा।'

[६]

सफ़ीना को किसी प्रकार नूर मुहम्मद को प्रसन्न करना था। पहिले तो उसने स्वयं अपनी ओर उसे आकर्षित करना चाहा, किन्तु अपने फंदे में फंसता न देख वह किसी दूसरी नौजवान और सुन्दर लड़की की खोज में लग गयी। अपने गिरते हुए व्यापार को संभालने का उसके पास और कोई चारा न था।

वह अभी उस अपरिचित लड़की को भोजनादि करा के आराम से सोने के लिये छोड़ कर बाहर की बैठक में आयी ही थी कि एक अधेड़ ने वहां प्रवेश किया।

सफ़ीना को कदाचित् इस समय इस व्यक्ति का आना अच्छा न लगा किन्तु ऊपर से मुसकुराते हुए उसने कहा 'कहिए खां साहब, बेवक़्त कैसे निकल पड़े ?'

खां साहब के चेहरे पर भी इस वक़्त परेशानी के चिह्न से थे, बोले 'यों ही चला आया सफ़ीना बीबी।'

सफीना धीरे से बोली 'आज मेरी भी तबियत कुछ ठीक नहीं मालूम पड़ती। अभी अभी (एक उबासी लेकर) सोने ही जा रही थी।' खां साहब समझ गये कि इस समय सफ़ीना फुरसत में नहीं है, बोले 'मैं भी जा ही रहा हूं। अभी.....'

बात काटकर सफीना बोल पड़ी 'आगरे कब वापिस जा रहे हैं आप ?'

कुछ सोच कर खां साहब बोल 'अभी कुछ ठीक नहीं है। सुना है बादशाह सलामत इधर कुछ दिनों से बीमार हैं और सिपहसालार.....'

कहते-कहते खां साहब रुक गये। कदाचित् वे उस बात को कहने जा रहे थे जो गोपनीय थी, किन्तु सफ़ीना को बादशाह सलामत या उनकी बीमारी से कोई दिलचस्पी न थी। वह बोली 'मैं भी कुछ दिनों के लिए आगरा जाने की बात सोच रही हूं।'

खां साहब चुपचाप बैठे रहे। सफ़ीना आलस्य के साथ एक अंगड़ाई भरती हुयी बोली 'आज तो नींद अभी से फटी पड़ रही है।'

लाचार होकर खां साहब खड़े हो गये। सफ़ीना उठती हुयी बोली 'मुआफ़ कीजियेगा खां साहब, आज मेरी तबियत कुछ ठीक नहीं है।'

'नहीं-नहीं, मैं खुद जा रहा हूं' कहते हुए खां साहब बाहर जाने लगे।

सफ़ीना उठती हुयी बोली 'अगर मौक़ा मिले तो कल.....'

'हां-हां, आजाऊंगा' कहते हुये खां साहब घर के बाहर हो गए।

सफीना वहीं सोफ़े पर पैर फैला कर लेट गयी।

× × × ×

उस व्यक्ति ने धीरे से कमरे में प्रवेश किया। बत्ती का मद्धिम प्रकाश पलंग पर लेटी हुई सुन्दरी के मुंह पर पड़ रहा था। उसका सौन्दर्य देख कर उस व्यक्ति की आंखें मानों कृतकृत्य सी हो गयीं।

तकिये पर उसके बाल छिटके हुए थे और वह अपना एक हाथ सीने पर रक्खे बेखबर सो रही थी।

वह व्यक्ति धीरे से उसके सिरहाने बैठ गया और उसके रेशम से मुलायम बालों पर अपना हाथ फेरने लगा। वह एकटक अपनी भूखी आंखों से उसकी रूप-माधुरी का पान कर रहा था। वह चाहता था कि सुन्दरी सोती ही रहे, जिससे वह जी भर कर उसकी इस बेसुध छवि को देखकर अपनी आंखों को तृप्त कर सके।

किन्तु वह अधिक देर तक इस दशा में न रह सकी। उसे कुलकुलाते देख उसने उसके बालों पर से अपना हाथ धीरे से हटा लिया।

उसने करवट ली और फिर सो गयी। अब और अधिक रुक सकना उसके लिये कठिन बात थी। वह धीरे-धीरे उसकी मांसल बाहों पर अपना हाथ फेरने लगा।

सुन्दरी की एक बांह में क्षण भर के लिए एक सिहरन सी हुई किन्तु वह शान्त होकर सोती रही। कदाचित् वह स्वप्न में किसी राजकुमार के स्पर्श का आनन्द-सा लूट रही थी।

उस व्यक्ति का साहस बढ़ा। धीरे से झुक कर उसने उसके गुलाबी कपोल पर अपने अधरों को छुआ दिया।

सुन्दरी ने नेत्र खोल दिये।

'हें ! आप !!' वह हड़बड़ा कर उठ बैठी।

व्यक्ति ने चेहरे पर मुसकान लाते हुए कहा 'हां, मैं हूं। क्या चौंक गयीं ?'

युवती जिस परिस्थिति में थी उसे भलीभांति समझ गयी थी। उठकर पलंग पर बैठ गयी थी, अब पलंग से उतर कर जाने का उपक्रम करने लगी।

उसकी कलाई को कस कर पकड़ते हुए उस व्यक्ति ने कहा 'आप नाराज हो गयीं ?'

सुन्दरी ने अपने को संभालते हुए कहा 'क्या यही इंसानियत है ? तब शायद चोरों से बच कर मैं डाकुओं के अड्डे में फंस गयी हूं ?'

वह व्यक्ति किंचित मुसकुरा कर बोला 'यहां डाकेजनी की कोई बात नहीं है परियों की रानी। मैं तुम्हारे नजदीक.....'

सुन्दरी किंचित क्रोध करती हुई बोली 'आपको इस तरह एक तनहा और जवान औरत के कमरे में घुस कर आने की हिम्मत कैसे हुई ?'

युवक उसी प्रकार सस्मित मुद्रा में बोला 'क्या आपको मेरा आना नागवार गुजरा है ?'

'बेशक' सुन्दरी ने दृढ़ता के साथ कहा।

युवक थोड़ी देर मौन रहा। फिर बोला 'मैं तुम्हारे कदमों पर अपना सब कुछ लुटा चुका हूं मलिके हुस्न। क्या मेरे लिये आपके दिल में जरा भी जगह नहीं है ?'

सुंदरी कुछ सोचने लगी। उसे कुछ पिघलता देख युवक का साहस बड़ा। उसने उसके हाथ को धीरे से अपने हाथ में लेते हुए कहा 'मेरा सब कुछ निसार है तुम पर.....'

सुन्दरी फौरन बोल उठी 'क्या परेशानी की चीज है ! हमारे और आपके बीच में अभी तक कोई सनहसाई भी नहीं है और आप अपना दिल मुझ पर उंडेलने लगे। आप हैं कौन जनाब ?'

क्षण भर रुक कर युवक ने कहा 'मैं दिल्ली का मशहूर सौदागर नूरमुहम्मद हूं, लेकिन इस वक्त तुम्हारे साथ दिल का सौदा करना चाहता हूं।'

सुन्दरी समझ चुकी थी कि युवक कोई साधारण व्यक्ति नहीं है, फिर भी बोली 'लेकिन दिल देकर आप बदले में चाहते क्या हैं ?'

युवक मुसकुरा कर बोला 'अगर मेहरबानी हो तो बदले में दिल ही चाहता हूं।'

सुन्दरी बोल उठी 'और अगर कोई इसे दे सकने के लिये मजबूर न हो तब ?'

युवक सोचने लगा। सुन्दरी फिर बोली 'बस। और कुछ कहना है आपको ?'

युवक बोला 'मैं तुम्हें जी-जान से चाहता हूं .....'

बीच ही में सुन्दरी बोल उठी 'लेकिन इसका सुबूत ?'

युवक निरुत्तर होकर कुछ घबड़ा-सा गया था। बोला 'जिस तरह का सुबूत आप चाहती हों देने को तैयार हूं।'

कुछ सोच कर सुन्दरी बोली 'आपका यह इश्क कायम रह सकेगा ?'

'जरूर' युवक ने दृढ़ता से कहा।

सुन्दरी चुप हो गई। युवक ने उसे अपनी गोद में खींच लिया।

[७]

रशीद खां ने कहा 'मगर मैं तुमसे शादी करने के लिये तैयार हूं हुस्नेजहां।'

ज़रा गम्भीर होकर रज़िया बोली 'मगर मैं आप से शादी नहीं करना चाहती जनाब।'

'क्यों' रशीद खां ने भवों पर बल डालते हुए कहा।

रज़िया फौरन बोल पड़ी 'इसलिए कि मैं आपको प्यार नहीं करती।'

रशीद खां अपने को अपमानित समझ कर स्फुट स्वर में बोले 'इसकी वजह ?'

रज़िया दृढ़ स्वर में बोली 'इस बात की कोई वजह नहीं हुआ करती खां साहब। यह दिल की बात है।'

रशीद खां बोल उठे 'यह सिर्फ आपका बहाना है। मैं रुपयों और जवाहरात से आपका घर भर देने की हैसियत रखता हूं।'

हंस कर रज़िया बोली 'लेकिन दौलत से दिल नहीं खरीदा जा सकता।'

स्फुट-स्वर से रशीद खां ने कहा 'आप भूल रही हैं। दौलत से सभी कुछ हो सकता है।'

रज़िया चुप रही। रशीद खां ने कहा 'मैं आपसे इल्तिजा करता हूं कि आप मेरी बात पर फिर से ग़ौर करें।'

रज़िया बोल उठी 'मैं अपना फैसला दे चुकी हूं।'

रशीद खां ने कहा 'लेकिन ऐसा न हो कि खुद मजबूर होकर आपको अपना फैसला बदलना पड़े।'

रज़िया गौर से रशीद खां की ओर देखती हुयी बोली 'इसके मानी ?'

लम्पटता का भाव चेहरे पर लाता हुआ रशीद खां बोला 'इसके माने यह हैं कि कहीं मजबूर होकर आपको अपना फैसला बदलना न पड़े।'

एकाएक खड़ी होकर रज़िया ने कहा 'आपका मतलब क्या है ? क्या आप मुझे धमकी देने आये हैं ?'

रशीद खां ने उसी प्रकार बैठे ही बैठे कहा 'आपको हासिल करने के लिए शायद सभी कुछ करना पड़ेगा।'

रज़िया कोध मे फुफकारती हुयी बोली 'आप शरीफ़ आदमियों की तरह चुपचाप यहां से चल जांय वरना.....'

एकाएक खड़े होकर रशीद खां ने कहा 'वरना क्या होगा ?'

रज़िया स्फुट-स्वर में बोली 'वरना मुझे मजबूर होकर आपके हटाने के लिए जो कार्रवाई करना पड़ेगी उसे शायद आप पसंद न करेंगे।'

रशीद खां का चेहरा क्रोध से तमतमा उठा था। वे कठोर शब्दों में बोले 'गुरूर

की पुतली, मैं तेरा गुरूर तोड़ कर ही रहूंगा। रशीद खां को तूने अभी पहिचाना नहीं है। अच्छी बात है।'

और क्रोध में जल्दी-जल्दी क़दम बढ़ाते हुए रशीद खां घर से बाहर हो गये।

रज़िया खड़ी देखती रह गयी।

× × ×

शाहज़ादे सलीम अभी उठकर ही आये थे। हंसकर बोले 'इतना परेशान क्यों हो रहे हो खां साहब ?'

रशीद खां ने स्फुट-स्वर में कहा 'वह बड़ी बेढब औरत है दोस्त। वह आसानी से क़ाबू में न आ सकेगी।'

उसी प्रकार मुसकुराते हुये शाहज़ादे ने कहा 'औरत को बस में करने का भी हुनर होता है रशीद। शायद वह तुममें नहीं है।'

रशीद खां ने पराजितों की भांति कहा 'मैं ज़रूरत से ज्यादा औरत की खुशामद नहीं कर सकता। मैं किसी की खुशामद करने का आदी भी नहीं हूं।'

शाहज़ादे सलीम मन ही मन हंसे। मुसकुराते हुये बोले 'औरत और खुशामद दो अलग अलग चीजें नहीं हैं खां साहब। अगर खुशामद करना न आती हो तो इश्क से बाज़ आना चाहिए। मैं इश्क के मामले में जोर और जबरदस्ती का कायल नहीं हूं। औरत को अपनी खुशामद और मिलनसारी से खुश करते जाओ, फिर तो बड़े-बड़े पत्थर से दिल भी पसीज उठते हैं।'

रशीद खां निरुत्तर से होकर बोले 'मगर मेरे मान का यह रोग नहीं है।'

शाहज़ादा सलीम अत्यंत गंभीर होकर बोले 'दौलत से दिल नहीं खरीदा जा सकता खां साहब। मैं इश्क में तड़प-तड़प कर जान दे देना कुबूल करूंगा, लेकिन औरत को जोरो-जुल्म से अपने कब्जे में लाना कभी पसंद न करूंगा। उस इश्क में मज़ा नहीं; उस प्यार में दिल को ठंडा करने की क़ूबत नहीं है रशीद खां। औरत को प्यार और मुहब्बत से ही जीता जा सकता है। प्यार, मुहब्बत, खुशामद और हमदर्दी से पत्थर का दिल रखने वाली औरत को भी पानी-पानी होना पड़ता है।'

रशीद खां बोल उठे 'आप शाहज़ादे हैं; हिन्दुस्तान के शाहंशाह के बेटे और सल्तनत के वली अहद हैं। आप जो चाहें सो कह सकते हैं, कर सकते हैं। कौन सी औरत आप को प्यार करने में फख्र न समझेगी।'

शाहज़ादा सलीम बोल उठे ' तुम्हारा यह ख्याल गलत है। औरत के सामने शाहज़ादा और फ़कीर कोई चीज़ नहीं। अगर खुदा के फजल से मैं गद्दी-नशीन हुआ तो

दुनियां को दिखला दूंगा कि मैं सब पर हुकूमत कर सकता हूं सिर्फ़ औरत पर नहीं। औरत की हुकूमत में रहना मेरे लिए वायसे फ़ख़ होगा। औरत पर कोई हुकूमत नहीं कर सकता।'

शाहज़ादे को आवश्यकता से अधिक गंभीर देख कर रशीद खां चुप रहे।

सलीम के मुंह से धीमे-स्वर में निकला 'तब ?'

रशीद बोल उठा 'मैं इस बाजी में हार गया।'

शाहज़ादा सलीम मुसकुराते हुये बोले 'अच्छा दोस्त। अब हबीब खां को अपना काम अंजाम देने के लिये तैयार हो जाना चाहिये।'

रशीद खां थोड़ी देर चुप रहे फिर निराशा के स्वर में बोले 'मुश्किल है।'

शाहज़ादे ने हंस कर कहा 'काम करने वाले के लिये बड़ी-बड़ी मुश्किलें भी आसान हो जाया करती हैं।' रशीद खां चुप रहे।

[८]

भारतीय इतिहास में मुगल सम्राट जलालुद्दीन अकबर का शासन काल स्वर्ण युग के नाम से पुकारा जाता है। साहित्य, संगीत और कला की जितनी उन्नति इस शासन-काल में हुयी उतनी कदाचित् कभी नहीं हुयी थी। इधर समृद्धि, स्वतंत्रता और शान्ति-काल ने लोगों को विलास-प्रिय तथा आवरण हीन भी बनाना प्रारंभ कर दिया था। नैतिकता का बांध टूट चला था और उसके स्थान पर मानव-चरित्र का लम्पटता, व्यभिचार तथा भोग-विलास से गठ-बंधन हो गया था। बड़े-बड़े रईस, ओहदेदार, व्यापारी और धनिक दिन-दहाड़े कौड़ियों के मोल निर्धन और पद-लोलुपों की बहिन-बेटियों की अस्मत खरीदने में जुट गये थे। स्वयं दिल्ली में न जाने कितने व्यभिचार के अड्डे स्थापित हो गये थे जिनमें खुल्लम-खुल्ला इस प्रकार के अनैतिक व्यापार होते रहते थे। राज्य के उच्च से उच्च कर्मचारी इन अड्डों से संबंधित रहते थ, अतएव इन अड्डों का फूलना फलना अनिवार्य था। इस अनैतिकता के विरुद्ध राज्य दरबार में किसी प्रकार की सुनवाई भी न थी।

इतिहास बतलाता है कि भारत-सम्राट अकबर के बहुत दिन तक कोई पुत्र न हुआ। बादशाह इस निमित्त साधू-संतों की बड़ी सेवा किया करता था। इसी समय आगरे से लगभग २०-२२ मील दूर सीकरी में शेख सलीम चिश्ती नामक एक महात्मा रहा करते थे। अकबर ने उन्हीं की शरण ली। कहा जाता है कि इन्हीं शेख सलीम चिश्ती के

आशीर्वाद से बादशाह के पुत्र हुआ। इन्हीं महात्मा के नाम पर ही नये शाहजादे का नाम सलीम रक्खा गया था।

सलीम बाल्यकाल ही से बड़ा ऐश-पसंद और उदार चित्त का था। शाहंशाह अकबर की बड़ी साध का यह पुत्र बड़ा होते होते अव्वल दर्जे का विलासी बन गया। सुरा और सुन्दरी उसके साथी हो गये। राजकुमारों को युद्ध पर भेजने की प्रथा मुगल-सम्राटों में थी, किन्तु अकबर ने कभी यह गवारा न किया कि उसका प्रिय पुत्र सलीम कभी किसी खतरे के स्थान पर भेजा जाय। अतएव सलीम के लिए सिवा भोग-विलास के और रह ही क्या गया।

अकबर प्राय: आगरे में रहता था, अतएव सलीम ने अपनी विलासिता का केन्द्र दिल्ली में बना रक्खा था। अकबर कभी सलीम को आंख से ओझल न होने देता था किन्तु फिर भी किसी न किसी बहाने से वह दिल्ली पहुंच ही जाता था। वहां पहुंच कर वह महीनों आगरे वापिस आने का नाम भी न लेता था।

उसकी शादी महाराज मानसिंह की बहिन से हुयी थी। सलीम की यह राजपूत-पत्नी अत्यंत ही सुन्दरी थी, किन्तु सलीम की विलासिता पर कोई विराम न लग सका। इस पत्नी से उसके खुसरो नाम का एक पुत्र भी था किन्तु स्त्री और पुत्र की ममता से वह दूर था।

सम्राट अकबर आज कल सलीम के प्रश्न को लेकर कुछ अधिक चिन्तित हैं। सलीम की विलासिता इतनी अधिक बढ़ी हुयी है कि वह अकबर के लिए एक गंभीर समस्या सी बन गयी है। और तभी आजकल सम्राट कुछ अधिक चिंतित रहते हैं।

सुनहरे पलंग पर सम्राट लेटे हुये किसी चिन्ता में निमग्न हैं। कभी कभी उनके मुंह से 'हूं' शब्द धीरे से निकल कर कमरे की नीरवता में विलीन हो जाता है।

तभी प्रहरी ने अभिवादन करके सेनापति महराज मानसिंह के आने की सूचना दी।

सम्राट ने धीरे से कहा 'महाराज को बाइज्जत लाओ।'

अकबर के चेहरे का भाव बदल गया था। चिन्ता के स्थान पर गंभीरता आ गयी थी।

महाराज मानसिंह ने कमरे में प्रवेश कर सम्राट को अभिवादन किया तथा चुपचाप पलंग के पास पड़ी हुयी रत्न-जड़ित कुर्सी पर बैठ गये।

सम्राट ने मुसकुराते हुये कहा 'महाराज अच्छे तो हैं ?'

महाराज मानसिंह ने बड़े अदब के साथ उत्तर देते हुए कहा 'सम्राट की कृपा से सब कुछ ठीक है।'

अकबर थोड़ी देर तक चुप रहा फिर बोला 'सलीम दिल्ली मे अभी तक नहीं आया मानसिंह। मुझे इस बात की बड़ी फ़िक्र है।'

महाराज मानसिंह ने उत्तर दिया 'क्या शाहजादे को दिल्ली से बुलाने के लिए सैनिकों को भेजा जाय शाहंशाह आलम ? मेरा ख्याल है कि हुजूर के बुलाने से शाहजादे कभी दिल्ली में न रुक सकेंगे।'

सम्राट फिर थोड़ी देर तक चुप रहे, फिर बोले 'शाहजादे के बारे में ही बात करने के लिए मैंने इस वक़्त तुम्हें तकलीफ दी है मानसिंह। मै इस बारे में तुमसे कुछ मशविरा करना चाहता हूं।'

महाराज मानसिंह ने कहा 'मै तैयार हूं जहांपनाह। ठीक ही सलाह देने की कोशिश करूंगा।'

सम्राट कहने लगे 'मै सलीम को कितना चाहता हूं मानसिंह यह तो तुम्हें मालूम ही है। इधर कुछ दिनों से उसका रवैया मुझे ठीक नजर नहीं आ रहा है। सुना है दिल्ली में उसके बारे में तरह-तरह की अफवाहें फैल रही है। वह इस मुल्क का वली अहद है, यह सोच सोच कर मैं बड़ा परेशान हो उठता हूं।'

महाराज मानसिंह चुप रहे।

सम्राट कहते गये 'शाहज़ादे को इन बातों के अलावा हुकूमत के काम को भी तो अभी से अंजाम देते रहना है। सलीम का ख्याल करके ही मैंने कभी उसे किसी जंग के मैदान में भी भेजने का हुक्म नहीं दिया। यह मेरी कमजोरी है।'

कह कर सम्राट ने एक सांस ली। महाराज मानसिंह के मुंह से निकल गया 'हम लोगों की यह गलती रही है जहांपनाह।'

अकबर कह पड़ा 'बेशक, बेशक। आप ठीक फ़रमा रहे हैं मानसिंह साहब। यह बेशक हमारी ग़लती थी। मगर अब क्या उस ग़लती को दुरुस्त नहीं किया जा सकता !'

सिर हिलाते हुए महाराज मानसिंह ने कहा 'क्यों नहीं। जहांपनाह के इशारे और हुक्म से कौन-सा काम नहीं हो सकता।'

सम्राट कुछ प्रसन्न होकर कह उठे 'तब ठीक है। आज ही सलीम को दिल्ली से बुलाने के लिए सवार रवाना कीजिये महाराज मानसिंह। यहां आने पर उसे मैदाने जंग की तरफ़ रवाना कर देना होगा। मगर एक बात का ख्याल.....'

महाराज मानसिंह बीच ही में बोल उठे 'मैं सम्राट का मतलब समझ गया। आप निश्चिन्त रहें, कहीं पर भी शाहज़ादे का बाल भी बांका न हो पायगा।'

अकबर ने सन्तोष की सांस ली।

महाराज मानसिंह कहने लगे 'मैं उन्हें बंगाल की तरफ रवाना कर दूंगा। वहां किसी तरह का खतरा नहीं है।'

सम्राट ने कहा 'रंगीन मिजाज़ सलीम को बंगाल जाने में किसी तरह तकलीफ़ न हो महाराज मानसिंह। इसका अच्छा खासा इन्तजाम हो जाना चाहिये।'

महाराज मानसिंह बोल उठे 'सम्राट किसी बात की चिन्ता न करें। मानसिंह के होते हुये कोई शाहज़ादे की तरह देख भी न सकेगा।'

थोड़ी देर चुप रह कर सम्राट ने कहा 'सलीम को आगरे बुलाया जाय। मैं उसे मैदाने जंग में भेजने का हुक्म देता हूं।'

महाराज मानसिंह ने दूसरे ही दिन सबेरे शाहज़ादे सलीम के नाम सम्राट का परवाना दो सैनिकों के हाथ रवाना कर दिया।

[६]

शाहज़ादा सलीम ने आज स्वयं ही रज़िया से मुलाकात करने का निश्चय किया था। इस भेंट का समय दस बजे रात्रि का रक्खा गया था।

हबीब खां ने कहा 'तब मैं.....

शाहज़ादे ने कहा 'मेरे नाकामयाब होने पर तुम्हें मौका दिया जायगा हबीब। अब ज्यादा रुकना मेरे बरदाश्त के बाहर हो गया है।'

हबीब खां कह उठे 'जैसी शाहज़ादे की मर्जी।'

अब सलीम के लिये रास्ता साफ था। उन्होंने अपने को बहुमूल्य और आकर्षक वस्त्रों में अलंकृत किया और रात्रि के अंधकार और सन्नाटे में चुपचाप गाड़ी पर सवार होकर रज़िया को मकान की तरफ रवाना हो गये।

जिस समय शाहज़ादा सलीम ने रज़िया के घर में प्रवेश किया उस समय भी घर में चहल-पहल सी मालूम दी। वे सीधे ड्राइंग रूम में जाकर बैठ गये। सामने एक घंटी रक्खी थी। उन्होंने उसे दबाकर बजा दिया।

फौरन एक नौकर आ उपस्थित हुआ। शाहज़ादे ने कहा 'मालकिन से मिलना चाहता हूं।'

नौकर धीरे से अंदर चला गया। भीतर के कमरे से बातचीत की आवाज अस्पष्ट सी कानों में शाहजादे के आ रही थी। ऐसा प्रतीत होता था कि गरमगरम बहस हो रही है।

शाहजादे को बैठे बैठे लगभग आध घंटा हो गया किन्तु नौकर लौट कर न आया। अंत में उन्होंने विवश होकर फिर घंटी बजा दी।

कई मिनट तक प्रतीक्षा करने पर भी नौकर न आया। अब शाहजादे को थोड़ी परेशानी मालूम दी। वे लबादे से अपना सारा शरीर छिपाये हुये थे, यहां तक कि मुंह पर भी नकाब सी पड़ी हुयी जिसे इस समय उन्होंने सिर पर डाल दिया था।

गरमागरम बहस बढ़ती जा रही थी, किन्तु नौकर न आया। अंत में विवश होकर वे उठ खड़े हुये। वे धीरे धीरे पग बढ़ाते हुये अंदर घुसे और किवाड़ से झांक कर अंदर देखने लगे।

एक कुर्सी पर एक अत्यंत सुन्दरी कुछ परेशानी की हालत में बैठी हुई थी। पास ही में उसे दोनों तरफ से दो-तीन व्यक्ति घेरे से हुये थे। सामने की दो कुर्सियों पर दो हृष्ट पुष्ठ गुंडे से बैठे हुये थे जो जाहिरा तौर से पक्के बदमाश मालूम पड़ रहे थे।

उनमें से एक गुंडे ने हंस कर कहा 'बीबी साहिबा आपको अभी मेरे साथ चलना पड़ेगा। हम लोग बिना आपको ले जाये रह नहीं सकते। आप अच्छी तरह सोच लें कि चुपचाप चले चलने में ही आप की भलाई है।'

दूसरा बोला 'अगर आप सीधी तरह न चलीं तो हमको आपके साथ जबरदस्ती करना पड़ेगी।'

वह स्त्री रोनी सी शक्ल बना कर स्फुट-स्वर में बोल उठी 'मैं हर्गिज कहीं नहीं जा सकती हूं। इस तरह की गुंडेबाजी से हम लोग डरने वाले नहीं हैं। शाहंशाह अकबर की हुकूमत में.....'

'ही-ही-ही' कह कर दोनों गुंडों ने ठहाका लगाया और बोले 'तुम्हारी जैसी बेहया और अस्मत-फरोश औरतों की मदद के लिए शायद जहांपनाह खुद ही दौड़ कर आ जायेंगे। वाहरी मेरी बुलबुल !'

और दोनों ने फिर ठहाका लगाया। स्त्री और उसके घरवाले भयभीत हो गये थे। एक गुंडे ने एक चमचमाता हुआ छुरा निकाला और उसे दिखलाते हुए कहा 'इधर देखो बीबी जान ! हम इसकी ताकत पर दिल्ली में हुकूमत करते हैं।'

वह उठ कर उस स्त्री की ओर बढ़ा और उसकी कलाई को अपने मजबूत हाथों में जबरदस्ती दबा लिया।

स्त्री चीख पड़ी किन्तु बिना किसी बात की परवाह किये ही गुंडे ने उसे कुर्सी से घसीट कर खड़ा कर दिया और कड़े-स्वर में बोला 'तुझको मेरे साथ चलना पड़ेगा। उठ !'

अब रुके रहना शाहजादे की ताकत के बाहर था। वे धड़धड़ाते हुये कमरे में घुस कर बीचोंबीच खड़े हो गये और कड़क कर बोले 'शैतानके बच्चे.....'

और उनकी लात उसकी कमर पर पड़ी। गुंडा दूर जा गिरा और उसकी छुरी छिटक कर उससे भी दूर जा पड़ी। दूसरा गुंडा भी भड़भड़ा कर खड़ा हो गया था। दोनों ने गौर से इस नये आक्रमणकारी के मुंह की ओर देखा और आश्चर्य के साथ उनके मुंह से निकला 'हंय, आप !'

शाहजादे की आंखों से चिनगारियां निकल रहीं थीं। वे बोले 'एक औरत पर जबरदस्ती हाथ डालने और उस पर जोरो-जुल्म करने वालों को मौत की सजा मिलनी चाहिये। मैं तुम दोनों को अभी जहन्नुम भेज सकता हूं।'

दोनों गुंडे थर-थर कांप रहे थे। लड़खड़ाती जबान से बोले 'इस मरतबा हुजूर हम लोगों को मुआफ़ी अता करें। हम कभी.....'

पास में खड़े, हुए गुंडे की पीठ पर एक लात जमाते हुए शाहजादे ने कहा 'भाग जाओ शैतानों।'

दोनों गुंडे गिरते-पड़ते भाग खड़े हुये और फौरन मकान के बाहर हो गये।

शाहजादा गुस्से में भरा हुआ कुछ क्षण उस सन्नाटे में खड़ा रहा। इस बीच उस स्त्री की भी परेशानी समाप्त हो गयी थी। उसने वीणा के से मीठे स्वर में कहा 'आप तशरीफ रक्खें।'

शाहजादा सलीम चुपचाप एक कुर्सी पर बैठ गय। उस स्त्री ने, जो वास्तव में रजिया ही थी, कृतज्ञता प्रकट करते हुये कहा 'आपको हम लोगों के पीछे बड़ी जहमत हुयी। मैं मुआफी को ख्वास्तगार हूं।'

अब शाहजादे की गंभीरता दूर हुई। वे मुस्कुरा कर बोले 'मुआफी की क्या बात है हुस्न की मलिका। यह तो हरेक इंसान का फर्ज है। मैंने उसी फर्ज को अदा किया है।'

अब रजिया कमरे में अकेली रह गयी थी। उसके दिल पर अब भी गुंडों का आतंक सा मालूम पड़ता था। उसने नौकर को बुला कर भीतर से द्वार बंद कर लेने की आज्ञा दी।

शाहजादे ने मुसकुराते हुए कहा 'आप घबरायें नहीं, वे लोग भूल से भी अब इधर देखने का नाम न लेंगे।'

रजिया आश्चर्य से शाहजादे के मुंह की ओर देखने लगी।

शाहजादे ने उसी प्रकार मुसकुराते हुये कहा 'गुण्डों में ताकत ही कितनी होती है ये हमेशा औरतों ही का मुकाबिला करते हैं; मर्दों की शक्ल देखते ही इनके औसान खता हो जाते हैं।'

रजिया की अब स्वाभाविक स्फूर्ति लौट रही थी, बोली 'तब क्या आपने औरतों को इतना कमजोर समझ लिया है? मर्द भी तो कहीं-कहीं इतने डरपोक हुआ करते हैं।'

हंस कर शाहजादे ने कहा 'आप ठीक कह रही हैं, मगर औरत और मर्द में एक ऐसा फर्क है जिसे खुदादाद कहा जा सकता है।'

रजिया झट बोल उठी 'वह फर्क क्या है?'

अब शाहजादा क्षण भर चुप रह कर तथा कुछ गंभीर होकर बोला 'मर्द को खुदा ने लोहा का सा जिगर दिया है। मुश्किलें और चोटें बरदाश्त करना ही मर्द का काम है।'

रजिया बीच ही में बोल दी 'और औरतों का काम?'

'हंस कर शाहजादे ने कहा 'और औरतों का काम मर्दों पर चोट करना। जो मर्द औरत की चोट बर्दाश्त करके भी घबड़ाता नहीं है वही मर्द है।'

रजिया कुछ लजा सी गयी थी। शाहजादे ने अब कुछ गंभीर होकर कहा 'औरत पर चोट करना मर्द के लिये बायसे शर्म है। उसे तो बात करने के तर्जो-अमल ही से जीता जा सकता है—जो यदि ऐसा नहीं कर सकता वह मर्द नहीं है।

रजिया निरुत्तर सी हो रही थी किन्तु बोली 'क्या औरत को बातो से जीत लेना आप बहुत मामूली सी बात समझते हैं।'

उसके कुछ और निकट कुर्सी बढ़ाते हुये शाहजादा सलीम ने कहा 'बेशक। औरत का दिल तो मोम की सी लोच रखता है उसे झुका लेना बहुत मुश्किल बात नहीं है। आखिर औरत भी तो एक इंसान ही है न?'

रजिया बोली 'मुझे मुआफ करें आप, मैं आपकी बात से इत्तिफाक

नहीं करती। सूरत, शक्ल, मरतवा और पैसा भी औरत के रिझाने के लिये काफी अहमियत रखते हैं।'

शाहजादा एक हलकी सी मुसकान के साथ बोला 'यह बात आप दिल से नहीं कह रही हैं। वक्त आने पर आपको इसका सुबूत मिल जायगा।'

कह कर शाहजादा चुप हो गया। थोड़ी देर बाद रजिया ने साहस करके कहा 'खैर, अब मैं क्या हुजूर के यहां आने का मकसद पूछ सकती हूं ?'

शाहजादा सलीम कदाचित पहिले ही से इस प्रश्न के लिये तैयार थे। मनमोहिनी मुसकान को रजिया की आंखों में उंडेलते हुए मादक-स्वर में बोले 'एक औरत के पास एक मर्द के आने का जो मकसद हो सकता है वही मेरा भी है।'

किंचित क्रोध भरी आकृति को बनाते हुए रजिया बोली 'याने इसका मतलब ?'

शाहजादे ने शान्त-भाव से उत्तर दिया 'यानी दिल की तस्कीन के लिये, चन्द मीठी बातों का लुत्फ उठाने के लिये और उसकी चोटों के बार से अपने दिल को बरदाश्त करने के लायक बनाने के लिये।'

रजिया समझ गयी कि यह साधारण व्यक्ति नहीं है, बोली 'आप साफ-साफ अपने आने का मतलब बयान करें।'

शाहजादे ने धीरे से कहा 'और यही सवाल मैं हुजूर से भी पूंछना चाहता हूं। आप मेहरबानी करके दिल्ली में तशरीफ लाने का मतलब बतलाने की तकलीफ करें।'

रजिया कुछ घबड़ा कर शाहजादे सलीम के मुंह की ओर कुछ गौर से देखने लगी। शाहजादा कहता गया 'आप हमारे शहर में तशरीफ लायें और हम आपकी मिजाज पुर्सी के लिये भी अगर आकर हाजिर हों तो आप हमसे इस तरह के सवाल पूछने लगें ? यह किस तहजीब की किताब का सफा है हुस्न की परी।'

रजिया निरुत्तर सी होती जा रही थी। बोली 'आपकी बातें मेरी समझ में नहीं आ रही हैं। मैं तो.....'

बीच ही में शाहजादा बोल उठा 'मैं अपनी बात आपको समझाना ही कब चाहता हूं हुस्ने जहां। मैं तो सिर्फ आपके पास उसी मकसद से आया हूं जिस मकसद से आप दिल्ली में तशरीफ लायी हैं।'

इन चाल-फेर की बातों से घबड़ा कर रजिया बोल उठी 'कैसा मकसद ? मैं कुछ समझी नहीं।'

हंस कर शाहजादे ने कहा 'आप बेकार परेशान हो रही हैं। मैं तो साफ-साफ कह चुका हूं कि आप अपने दिल्ली तशरीफ लाने का मकसद बता दें, बस मेरा मकसद भी मिस्ल आईना आपके सामने आजायगा।'

रजिया परेशान सी हो रही थी, झट बोली 'आपकी तारीफ ?'

हंस कर शाहजादे ने कहा 'मेरी बहुत बड़ी तारीफ है और कुछ भी नहीं है। आपकी तरह मैं भी दिल्ली का बादशाह नहीं हूं; फिर हम में और आप में इस तरह का कोई सवाल पैदा ही नहीं होता।'

रजिया की वाक्य-शक्ति लुप्त सी हुयी जा रही थी। शाहजादे ने धीरे से कहना प्रारंभ किया 'आपको जैसा सुना था वैसा ही पाया। आपके हुस्न की क्या तारीफ की जाय ? मानों चांद जमीन पर उतर आया है। आप जरूर किसी शाही खान्दान से ताअल्लुक रखती हैं। मामूली लोगों में यह खूबसूरती, यह हुस्न कहां ? आपको देखते ही दिल का चिराग रोशन हो उठता है। जैसा आपका हुस्न है वैसा ही मिजाज भी आपने पाया है; आपकी मेहमानदारी देखकर मैं तो हैरत में रह गया हूं?'

रजिया की विचार-शक्ति अब शून्य सी थी। वह शाहजादे की बातें सुन-सुन कर बेसुध सी हुयी जा रही थी। उसने शाहजादे की आंखों, बातों और व्यवहार में कुछ ऐसा आकर्षण देखा जो उसे न बोलने के लिये मजबूर सा किये जा रहा था उसकी आंखें धीरे-धीरे बंद सी हुयी जा रही थीं।

यह सब कुछ शाहजादे से छिपा न रहा। उसने धीरे से उसका एक हाथ अपने हाथ में ले लिया और प्रेम भरे शब्दों में बोला 'मैं आपकी क्या खिदमत कर सकता हूं ?'

रजिया ने कुछ आपत्ति न की। शाहजादा बराबर उसके हाथ पर अपना हाथ फेरता रहा। कुछ संभल कर रजिया बोली 'ओह...आप ये क्या कर रहे हैं ?

शाहजादा अर्चना के से शब्दों में बोला 'ऐ परियों की रानी, मैं तुम्हारे लायक नहीं हूं। बौना होकर चांद को छूना चाहता हूं। क्या तुम मुझे मुआफ न कर दोगी।'

रजिया चुप थी। शाहजादे ने उसके कंधे पर अपना हाथ रखते हुए कहा 'चुप क्यों हो गयीं रजिया ? मैं एक लमहा भी बिना तुम्हारे मुंह से कुछ सुने अपने पर काबू नहीं रख सकता।'

रजिया फिर भी चुप थी। शाहजादा उसकी खुली हुयी मांसल बाहों पर धीरे धीरे प्रेम से हाथ फेरता हुआ बोला 'तुम्हारे हाथ बिक गया हूं हुस्ने जहां। क्या तुम अपने मुंह से एक लफ्ज भी न कहोगी। ओह, बोलो परी, मेरी मलिका।'

एकाएक रजिया संभल कर अलग हो गयी और परेशानी के शब्दों में बोली 'ओह, क्या तुम मुझे पागल बना दोगे अजनबी। मैं...मैं...मैं...'

शाहजादा बोला 'मैं खुद पागल हूं। खुदा की कारीगरी का यह जीता-

जागता नमूना देख कर कौन न पागल हो जायगा। बोलो परी, मैं किसी भी शर्त पर अपना सब कुछ तुम्हारे कदमों पर निसार कर सकता हूं।'

कहते कहते शाहजादा सलीम प्रार्थना की मुद्रा में घुटने मोड़ कर उसके सामने बैठ गये।

शाहजादे में जवानी, सौंदर्य, बांकपन, वाक्पटुता, नम्रता, विनय और इंसानियत सभी कुछ रजिया देख रही थी। वह बोली 'आप यह क्या कर रहे हैं ? खुदा के लिए आप कुर्सी पर बैठ जाइये। मुझे कुछ सोचने का वक्त दीजिए।'

किन्तु शाहजादा उसी मुद्रा में बैठा रहा। रजिया ने उसे अपने सुकोमल हाथों से उठाया। अवसर पाकर शाहजादे ने उसकी गोरी-गोरी और सुडौल बाहों को प्रेम से चूम लिया। रजिया सिहिर उठी।

कुर्सी पर बैठते हुए शाहजादे ने कहा 'मुझे उम्मीद है कि आप मेरी इन तमाम गुस्ताखियों को मुआफ़ करेंगीं। अगर मुआफ़ न कर सकें तो मुझे अभी यहां से फौरन चले जाने का हुक्म दें।'

रजिया के चेहरे पर अब कुछ मुसकुराहट आ गयी। वह बोली 'लेकिन इतने सस्ते में यह इश्क़ का सौदा न पट सकेगा अजनबी। इसके लिए तुम्हें लम्बी कीमत चुकानी पड़ेगी।'

शाहजादा उठ कर खड़ा हो गया और सोफ़े में उसकी बगल में जाकर बैठ गया। अत्यन्त गंभीर होकर उसने रजिया के दोनों हाथ अपने हाथों में पकड़ लिए और दृढ़ता के स्वर में बोला 'यह तुम क्या मामूली सी बात कह रही हो रजिया ! तुम्हारे लिये आसमान के तारे लाकर भी तुम्हारी क़ीमत कोई नहीं चुका सकता। बोलो, मेरे लिए क्या हुक्म है ?'

रजिया चुप रह गयी थी। शाहजादे ने धीरे से उसे अपनी ओर खींच कर अपने तप्त अधरों को उसके मुलायम, चिकने और ठंडे कपोल पर रख दिया। रजिया बेहोश सी हो रही थी।

उसे अपनी गोद में लिटाते हुये शाहजादे ने कहा 'बोलो, मेरे अरमानों की मलिका, मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूं ?'

रजिया ने धीरे से अपने को आलिंगन से मुक्त कर लिया और बोली 'क्या आप मुझसे शादी कर सकेंगे ?'

शाहजादा शादी की बात सुनकर मुसकुराया। क्षण भर चुप रह कर बोला 'शादी करना मेरे लिए बहुत ही आसान बात है।'

'तब फिर ?' रजिया जल्दी से पूछ बैठी।

शाहज़ादा क्षण भर चुप रह कर बोला 'ऐसा भी मुमकिन है कि शायद आप ही उस बात के लिए तैयार न हों जिसके बारे में आप मेरे ख़्यालात जानना चाहती हैं।'

रजिया फिर आश्चर्य के साथ शाहजादे के मुंह की ओर देखने लगी।

शाहज़ादा बोल उठा 'मैं शादी की शर्त मंजूर करता हूं; मगर अगर आपकी तरफ से इंकार हो गया तो ?'

'तो-तो-तो' रजिया के मुंह से बार-बार निकला।

'तो उस वक्त आपको मेरी दरख्वास्त मंजूर करना पड़ेगी' मुसकुराते हुए शाहज़ादे ने कहा।

रजिया कुछ समझ न पा सकने के कारण परेशान हो रही थी। एकाएक शाहजादे का हाथ पकड़ती हुयी बोली 'आप-आप-आप क्या हैं ? मेहरबानी करके बतलाइये कि आप कौन हैं ? बोलिये।'

धीरे से उसके हाथ पर अपना हाथ फेरते हुए मुसकुरा कर शाहजादे ने कहा' 'आप घबड़ाइये नहीं। मैं न खुदा हूं न जिन्न। मैं शाहजादा सलीम हूं रजिया।'

'ऐं !' कहकर रजिया स्तंभित हो उसके मुंह की ओर देखने लगी।

[१०]

शाहजादे के कदमों के पास बैठते हुए रजिया ने कहा 'मुझे मुआफ करें हुज़ूर; मैं न जानती थी.....'

उसे उठाकर अपने पास बिठलाते हुए शाहजादे ने कहा 'मेरी मलिका, तुम भूल जाओ कि मैं शाहजादा सलीम हूं। मुहब्बत में न कोई शाहजादा है और न फकीर। मैं तुम्हें चाहता हूं रजिया।'

शाहजादे ने प्रेमोन्मत्त होकर उसे अंक में भर लिया। थोड़ी देर तक दोनो उसी प्रकार बेसुध से रहे। अपने को धीरे से मुक्त करते हुये रजिया ने कहा 'मैं आपकी हूं हुज़ूर, लेकिन.....'

और वह चुप हो गयी। रजिया के सुकोमल कपोलों पर हाथ फेरता हुआ बोला 'तुम इसकी फिक्र न करो रजिया। मैं सारा इन्तजाम करूंगा। आज बहुत वक्त हो गया है। कल मैं तुम्हारे पास ही रहूंगा।'

रजिया उसे प्यार से समेटते हुए बोली 'आपने मुझे पागल बना दिया है शाहजादे। अब तो एक लमहा भी आप से अलग होने का जी नहीं चाहता। मगर.....'

धीरे से खड़े होते हुए शाहजादे ने कहा 'आधीरात से ज्यादा वक्त हो गया है रजिया। अब चलने की इजाजत दो।'

रजिया उसके दाहिने हाथ को चूमती हुयी बोली 'कैसे कहूं ? तो कल की बात तय रही।'

उसके सुकोमल कपोलों को चूमते हुए शाहजादे ने हंसते हुए कहा 'बिल्कुल तय मेरी मलिका। अब तो तुम मेरी हो गयीं।'

'बिल्कुल' रजिया ने फौरन कह दिया।

शाहजादा सलीम अपने को लबादे से ढक कर जब रजिया के घर से बाहर हुए उस समय दो बज रहा था।

× × × ×

महल में पहुंचते ही शाहजादे को मालूम हो गया कि कोई आगरे से उसके नाम शाहंशाह का परवाना लेकर आया है। वह आश्चर्य में भर गया।

शाहजादे ने सोचा 'ऐसा तो नहीं है कि अब्बाजान ने मुझे आगरे बुला भेजा हो। ऐसा हुआ तो बड़ी बुरी बात होगी। अब तो रजिया हाथ आ गयी है, उसे छोड़ कर जाना बड़ा मुश्किल है। मगर...अगर अब्बाजान का हुक्म हुआ तब तो.....।..... रजिया भी क्या गजब की खूबसूरत है ? क्या वह.....मगर अब्बाजान इसे कभी न पसंद करेंगे। एक अजनबी लड़की हिन्दुस्तान की मलिका बने ऐसा भला वे कैसे गवारा कर सकेंगे ? फिर...रजिया को तो छोड़ना.....।'

और.....

शाहजादा सलीम ने शेष रात्रि इन्हीं मीठे स्वप्नों में काट दी। सबेरे ही उन्होंने कासिम को हाजिर होने की आज्ञा दी।

कासिम ने लम्बा सलाम बजाया और कायदे से खड़ा हो गया।'

शाहजादे ने कहा 'क्या खबर लेकर आये हो कासिम खां ?'

कासिम ने एक परवाना शाहजादे की ओर बढ़ा दिया।

परवाना पढ़ चुकने के बाद शाहजादे सलीम ने एक सांस ली और कहा 'अच्छी बात है।'

निहायत अदब के साथ कासिम खां ने कहा 'जहांपनाह ने जुबानी भी कुछ कहा है।'

शाहजादे ने धीरे से कहा 'वह क्या ?'

क़ासिम खां ने कहा 'जहांपनाह ने फरमाया है कि आप परवाना देखते ही आगरे की तरफ रवाना हो जायं।'

कुछ झल्लाकर शाहजादे ने कहा 'मगर ऐसी मेरी क्या जरूरत पड़ गयी है ?'

क़ासिम खां ने कुछ डरते हुए कहा 'हुजूर, बंदा बिल्कुल इस राज से नावाकिफ है।'

'हूं' कहते हुए शाहजादा सलीम रजिया की चिन्ता में निमग्न हो गये।

क़ासिम खां चुपचाप कमरे के बाहर हो गया।

शाहजादे ने नौकर को बुलाकर कहा 'हबीब खां को बुलाकर ला।'

'जो हुक्म' कह कर नौकर चला गया।

थोड़ी देर में हबीब खां आ पहुंचे।

शाहजादे ने मुसकुराते हुये कहा 'आओ, मेरे दोस्त।'

हबीब खां सामने कुर्सी पर बैठ गए।

शाहजादे ने मुसकुराते हुए कहा 'रजिया के यहां कल गया था मैं हबीब।'

हबीब खां बड़ी उत्सुकता दिखलाते हुए बोले 'आप तशरीफ ले गये थे ? वाह, वाह, आपको देखकर तो वह लोट-पोट हो गयी होगी। वल्लाह, आपको भी खुदा ने क्या सूरत बख्शी है कि.....'

शाहजादा बीच ही में बोल उठे 'तुम ठीक ही कह रहे हो हबीब। आध घंटे के अंदर ही रजिया बेगम पानी-पानी हो गयी।'

हबीब प्रारंभ ही से शाहजादा सलीम की खुशामद में रहता था। बोला 'मैं तो शुरू ही से जानता था कि आपके ही क़ाबू की वह चीज है। मियां रशीद आखिर को टापते ही रह गए न ?'

शाहजादे ने अपनी बात शुरू करते हुए कहा 'बेशक, खां साहब आप मेरे दोस्तों में सबसे ज्यादा वफादार दोस्त हैं। आप पर मुझे नाज है; अगर वाकई में आप भी रजिया पर फ़िदा हों तो मैं उसे मिनटों में आपके पास आने के लिए राजी कर सकता हूं।'

हबीब खां शाहजादे की बातें सुनकर गद्‌गद् हो गये। बोले 'हुजूर की मुझ पर जो इनायत रहती है वह मैं क्या जानता नहीं हूं। मैं आपका दोस्त होने के लायक नहीं हूं; मैं अपने को आपका एक ज़रख़रीद गुलाम समझता हूं। आप हमारे बादशाह हैं।'

शाहजादा सलीम उसकी पीठ ठोंकते हुए बोले 'वाह खां साहब। आप वाकई में उन दोस्तों में से हैं जिन पर मुझे नाज है। आप पर मुझे हर तरह का इत्मीनान है।'

हवीब खां बड़े प्रसन्न थे। कुछ रुक कर शाहजादे ने कहा 'आज मैं आगरे जा रहा हूं हबीब।'

आश्चर्य की मुद्रा में हबीब के मुंह से निकला 'यह आप क्या कह रहे हैं हुजूर ?'

सिर हिलाते हुए शाहजादे ने कहा 'हां, हबीब खां, मैं आज आगरे जा रहा हूं। अब्बाजान का परवाना आया है, पता नहीं क्या जरूरी काम आ पड़ा है।'

हवीब खां ने कुछ मायूस होकर कहा 'यह तो बुरी खबर सुनायी आपने।'

हंसते हुये शाहजादे ने कहा 'आप परेशान न हों खां साहब। मैं जल्दी ही लौटने की कोशिश करूंगा।'

हवीब खां उदास से सिर झुकाये बैठे रहे। शाहजादे ने कहना प्रारंभ किया 'जाने के पहिले मैं तुम्हे अपनी दो बहुत ही अज़ीज चीजें आपको सौंप जाना चाहता हूं। मुझे उम्मीद है कि आपके पास वे दोनों चीजें बहुत ही महफूज रहेंगी।'

हबीब खां प्रफुल्ल से होकर बोले 'जरूर, जो कुछ हुजूर मुझे सौंप जायंगे उसे मैं जान से भी ज्यादा हिफाजत से रक्खूंगा।'

कुछ सोच कर शाहजादे ने कहा 'दिल्ली मे सबसे अजीज मुझको यह मेरा महल है मैं इसमें किसी किस्म की तब्दीली या तारज्जुली गवारा नहीं कर सकता। मैं तुम्हे आज से अपने महल का मुंतजिम तैनात करता हूं। तुम्हे शाही खजाने से इसके लिये हर माह हज़ार रुपये मिला करेंगे।'

हबीब खां समझ न पा रहा था कि आज एकाएक उसकी किस्मत को क्या हो गया है ? वह चतुर था और देखने सुनने मे भी रोबीला लगता था किन्तु उसने कभी यह कल्पना भी न की थी कि उस जैसा साधारण व्यक्ति कभी शाही महल का मुंतजिम भी नियुक्त किया जा सकता है। वह मारे खुशी के कुछ बोल भी न सका।

शाहजादे ने फिर कहा 'और आज ही से तुम्हारे रहने का इंतजाम भी इसी महल में हो जायगा। तुम अब मामूली आदमी नहीं रहे हबीब खां।'

हवीब खां ने उठ कर बड़े अदब के साथ शाहजादे को अभिवादन किया। वह मुंह से कुछ कह न सका।

शाहजादे ने कहा 'और दूसरी चीज जो मुझे जान से भी ज्यादा अजीज है हबीब खां, उसे तुम जानते हो ?'

हवीब खां शाहजादे के मुंह की ओर देखने लगा। शाहजादे ने कहा 'और वह दूसरी चीज है रजिया।'

आश्चर्य के साथ हवीब खां के मुंह से निकल पड़ा 'रजिया! उसकी हिफाजत मैं कैसे कर सकूंगा हुजूर ?'

हंस कर शाहजादे ने कहा 'आप घबड़ाइय नहीं खां साहब। मैं रजिया को खुद आपको सौंपने का इंतिजाम कर दूंगा। रजिया इसी महल में तुम्हारे साथ रहेगी हबीब।'

हबीब खां कुछ परेशान सा होकर बोले 'आप क्या कह रहे हैं हुजूर ? मैं भला कैसे.....'

बात काट कर शाहजादे ने कहा 'रजिया यहीं आकर तुम्हारे संग रहेगी। तुम्हें कुछ भी न करना पड़ेगा हबीब। मैं सब कुछ ठीक करके जाऊंगा।'

हबीब खां केवल शाहजादे के मुंह की ओर देख रहे थे शाहजादे ने हंसते हुए कहा 'अपनी बीबी के साथ रहने में भी तुमको परेशानी होगी क्या खां साहब ?'

'बीबी ?' घबड़ा कर हबीब खां के मुंह से निकला।

शाहजादे ने उसी प्रकार मुसकुराते हुये कहा 'हां। रजिया तुम्हारी बीबी बन कर रहेगी इस महल में। ऐसी-वैसी बीबी नहीं, रजिया तुम्हारी निकाह की हुयी बीबी होगी।'

हबीब खां को आज सहसा अपने इस सौभाग्य पर विश्वास ही न था। शाही नौकरी और साथ-साथ रजिया जैसी परी का शौहर ? इन सब बातों का वह एकाएक कैसे विश्वास कर ले।

शाहजादे सलीम ने हंसते हुये कहा 'क्या मेरी बात का तुम्हें इत्मीनान नहीं हो रहा है खां साहब ? तुम जानते हो कि एक बार जो बात सलीम के मुंह से निकल जाती है वह कभी टलती नहीं है।'

हबीब खां का अब मुंह खुला 'हुजूर भला गलत कह सकते हैं।'

शाहजादे ने कहा 'आज ही शाम तक तुम्हारी शादी रजिया के साथ हो जायगी। ठीक है न ?'

हबीब खां के मुह से निकला 'जैसा हुजूर का हुक्म हो।'

शाहजादे ने कहा 'मगर इन सब कामों को अंजाम देने से पहिले एक शर्त है, वह तुमको माननी पड़ेगी।'

हबीब खां बड़े विनम्र भाव में बोला 'हुजूर का कौन सा हुक्म टाला जा सकता है। आप उसे शर्त न कह कर हुक्म ही कहें।'

शाहजादे ने गंभीर होकर कहा 'शाबास हबीब खां, मुझे तुमसे ऐसी ही उम्मीद थी। तुम काबिले एतवार आदमी हो।'

हबीब खां ने फौरन आदाब बजाते हुए कहा 'मैं हुजूर का खादिम हूं।'

क्षण भर रुक कर शाहजादे सलीम ने कहा 'तुम्हारी बीबी होकर भी रजिया मेरी ही रहेगी हबीब खां। इस बात को अच्छी तरह समझ लो। दुनियां की नजरों में वह तुम्हारी बीबी रहेगी लेकिन जब मैं दिल्ली में रहूंगा तब तुम्हारा उसके साथ किसी भी तरह का सरोकार न रहेगा। समझ गये ?'

हबीब खां शाहजादे का अभिप्राय समझ गया था, झट आदाब करते हुये बोला 'हुजूर की जैसी मर्जी, लेकिन.....'

मुसकुराते हुये शाहजादे ने कहा 'मैं तुम्हारा मतलब समझ गया। रजिया तुम्हारी होगी और तुम्हें हर तरह से रहने का हक होगा।'

हबीब खां चुप रहे। शाहजादे ने कहा 'तुम अब जा सकते हो खां साहब। ठीक दो बजे तुमको फिर यहीं लौट कर आ जाना है। आज से फिर तुमको यहीं रहना होगा अपनी बीबी रजिया को लेकर।'

हबीब खां आज बड़ा प्रसन्न था। वह शाहजादे के प्रति अपनी कृतज्ञता किन शब्दों में प्रकाश करे ? वह बोला 'हुजूर के हुक्म का बजाना ही मेरा काम रहेगा।

और वह धीरे से चला गया।

[११]

शाहजादे ने अपनी बात समाप्त सी करते हुए कहा 'मैं जल्द ही लौटकर आऊँगा रजिया। मैंने ऐसा इन्तजाम कर दिया है जिससे तुम्हें किसी तरह की तकलीफ न होगी। सीधे-सादे (हँसकर) हबीब खां के पास रहकर तुम खुश हो जावोगी।'

रजिया कुछ सोचकर बोली 'मगर यह विवाह वाली बात भी.....'

शहजादे ने किंचित गंभीर होकर कहा 'यह इसीलिये कि दुनियां की आंखें हमको न देख सकें। हबीब खां की बीबी बनकर तुम मजे के साथ मेरे महल में मलिका की तरह रहोगी।'

किंचित प्रसन्नता सी प्रकट करते हुये रजिया ने कहा 'आपने तो कमाल किया है मेरे प्यारे। कुछ घंटों के अन्दर ही इतनी लम्बी-चौड़ी.....'

शाहजादे ने खींचकर उसे आलिंगन-बद्ध कर लिया और कहा 'तुम्हारे वास्ते सभी कुछ करने को तैयार हूँ मगर इस वक्त आगरा जाना.....'

रजिया बोल उठी 'मगर इस वक्त आगरा जाना क्या टल नहीं सकता है मेरे सरकार ?'

नकारात्मक ढंग से सिर हिलाते हुये शाहजादे ने कहा 'अब्बाजान का हुक्म टालने की हिम्मत मुझ में नहीं है। मगर मैं जल्द ही वापिस आऊंगा।'

रजिया उदास सी होकर बोली 'जाइये मैं आपसे नहीं बोलती। मैं भी आगरे चलूंगी आपके साथ।'

उसके भोले से मुखड़े पर अगणित चुम्बनों की वर्षा करते हुये शाहजादे ने कहा 'मैं जानता हूँ कि मेरे इस तरह से चले जाने से तुम्हें कितनी तकलीफ हो रही है रजिया! लेकिन क्या करूँ ?'

रजिया ने शाहजादे की गोद में लेटते हुये प्रेम - भरे शब्दों में कहा 'क्या एक रात के लिये भी आप नहीं ठहर सकते मेरे मालिक।'

एक सांस खींचकर छोड़ते हुए शाहजादे सलीम ने कहा 'नामुमकिन है रजिया। शायद मुझे आज ही सबेरे चला जाना चाहिये था। आज सवेरे रवाना न हो सकने की भी कैफियत मुझे अब्बाजान को देना पड़ेगी।'

एक मादक अँगड़ाई भरते हुए रजिया ने कहा 'मगर मैं कैसे रह सकूंगी तुम्हारे बिना हुजूर।'

हँसकर शाहजादे ने कहा 'शादी का कुछ तो लुत्फ़ खां साहब को उठा लेने दो रजिया। वह बेचारा.....'

और वे चुप हो गये।

रजिया उठकर बैठ गयी और बोली 'आज ही यह सब कुछ कैसे हो जायगा मेरे शाहजादे।'

शाहजादा सलीम ने कहा 'सलीम के सभी काम इसी तरह हुआ करते हैं। सारी तैयारी हो चुकी है; दो घंटे के भीतर ही तुम्हारा निकाह हबीब खां के साथ हो जायगा।'

रजिया बोल उठी 'फिर ?'

शाहजादे ने उत्तर देते हुये कहा 'और आज ही इस घर को सलाम करके तुम लोग हमारे महल में आ जाओगे।'

रजिया क्षण भर रुक कर बोली 'मैं अपने घर में अकेली नहीं हूं.....'

हँसकर शाहजादे ने कहा 'लेकिन हिन्दुस्तान के वली अहद शाहजादे सलीम का महल इतना छोटा नहीं है कि.....'

शाहजादे के मुँह पर हाथ रखते हुये रजिया ने कहा 'बस करिये। मेरा मतलब यह न था।'

शाहजादे ने कहा 'हबीब खां को महल में चार कमरे दे दिये गये हैं। और फिर (हँसकर प्रेम से) तुम तो सारे महल की मल्लिका हो न रजिया।'

कहते - कहते शाहजादे ने उसे प्रगाढ़ आलिंगन में बद्ध कर लिया।'

थोड़ी देर तक इसी प्रकार प्रेम का व्यापार चलता रहा। अंत में शाहजादे ने कहा 'तुम्हारे पास से तो हटने को जी नहीं चाहता रजिया। तुम्हें छोड़कर कैसे जा सकूंगा ?'

प्रेम से शाहजादे के गले मे दोनों हाथ डालते हुये रजिया ने कहा 'मुझे भूल तो न जाओगे ?'

शाहजादे ने कहा 'दुनियां में तुम्हें पाकर जो भूल सकता हैं मैं उसके बारे में सिर्फ यही कह सकता हूँ कि वह दिल नहीं रखता।'

रजिया ने अधखुली आंखों के साथ कहा 'और अगर अब्बाजान ने आपको वापिस न आने दिया तो ?'

शाहजादे ने गंभीर होकर कहा 'ऐसा नामुमकिन है रजिया। अब्बाजान मेरी आजादी पर इस तरह की कोई क़ैद न लगा सकेंगे।'

रजिया प्रेमोन्मत्त होकर उससे चिपट गयी।

× × × ×

और उसी दिन—

रजिया और हबीब खां का निकाह हो गया। दुनियां की नजरों में वे अब पति - पत्नी हो गयें थे, लेकिन वास्तव में क्या हुआ इसका आभास पाठकों को मिल चुका है।

उसी दिन शाम को रजिया सपरिवार अपना मकान खाली करके शाही महल में आ गयी। हबीब खां राजमहल के प्रबंधक नियुक्त हो चुके थे, अतएव राजमहल पर अब हबीब खां और रजिया का ही कब्जा था।

शाहजादे के आगरे रवाना होने की सारी तैयारियां हो चुकी थीं। वह एक रात दिल्ली में ठहरना चाहता था किन्तु अपने पिता के स्वभाव से वह अच्छी तरह परिचित था। वह रात्रि हबीब खां की सोहागरात थी किन्तु घटनावश ही वह सौभाग्य खां साहब को प्राप्त हो गया था।

पहिली बार जब रजिया की हबीब खां से भेंट हुयी तो खां साहब ने एक प्रेम भरी दृष्टि से अपनी भावी पत्नी की ओर देखा।

दृष्टि को पढ़कर रजिया के मुंह से निकला 'मुझे उम्मीद है कि शाहजादे ने आपको हमारी और अपनी शादी का सारा राज बतला दिया होगा।'

पिटे से मुंह से हबीब खां ने कहा 'हां, लेकिन.....'

दृढ़ स्वर में रजिया ने उत्तर दिया 'यहां 'लेकिन' की कोई गुंजाइश नहीं है।

शादी होने के पहिले मैं आपको बतला देना चाहती हूँ कि मेरे और शाहजादे के बीच में आपको आने का कभी कोई हक़ न रहेगा।'

उदास और मायूस होकर हबीब खां ने कहा 'मुझे मालूम है।'

रजिया ने अनुभव किया कि हबीब ऐसा कुछ बुरा व्यक्ति नहीं है। वह उसका पति होने योग्य ही है।'

कुछ नरम पड़कर उसने कहा 'वैसे मैं आपकी ही रहूंगी लेकिन शाहज़ादे के आने पर.....'

उसे कुछ लज्जा सी आ गयी और वह चुप हो गयी। छिः, वह क्या कहन जा रही थी ?

रजिया स्त्री है और स्त्री - सुलभ गुण अभी उसने सारे के सारे खो नहीं दिए हैं। न जाने उसके विचारों में कुछ परिवर्तन-सा होने लगा था। क्या अच्छा होता यदि वह हबीब खां के साथ एक वफादार बीबी की तरह रह सकती ?

किन्तु ऐसा असंभव था। वह जिस सीमा पर पहुंच चुकी है वहां से लौटना उसके लिये घातक है।

वह कड़े-स्वर में बोली 'इस महल में मेरी ही हुकूमत रहेगी।'

हबीब खां ने आजिजी सी प्रकट करते हुए कहा 'शाहजादे का ऐसा ही हुक्म है।'

शादी के बाद रजिया कुछ और और बात अनुभव करने लगी है। वह जानती है कि वह हबीब खां की पत्नी हो गयी है। फिर ?

आगे का कार्य - क्रम उसके वश की बात नहीं है। उसने अपनी नाव मँझधार में डाल दी है। पता नहीं वह किधर जाकर लगे ?

उसके हृदय में एक प्रकार का आन्दोलन-सा छिड़ गया था। वह पुनीत है, पवित्र है, किन्तु क्या वह ऐसी ही रह सकेगी। वह शाहजादे से प्रेम करती है या उस व्यक्ति से जो दुनियां की नजरों में उसका प्रेम - पात्र बन चुका है ?

इस बात का वह निर्णय नहीं कर पा रही है। उसका मनोविज्ञान, नैतिकता और अनैतिकता की चट्टानों से टक्कर ले रहा है।

वह चुपचाप जाकर अपने शयन-कक्ष में लेट गयी। थोड़ी ही देर में वह स्वप्नों के प्रदेश में चक्कर काटने लगी थी।

शाहजादा सलीम आगरे के लिये रवाना हो रहे थे। उनका घोड़ा तैयार खड़ा था।

सहसा वे रजिया से एक बार मिलने के लिये हबीब खां के कमरों की ओर बढ़ गये। सामने ही वाले कमरे में वे घुस गये।

रजिया कुर्सी पर दीवार की ओर मुंह किये हुये कुछ सोच विचार में निमग्न थी ।

शाहजादे ने धीरे से उसकी पीठ पर प्रेम से हाथ रक्खा ।

रजिया ने घूम कर पीछे देखा और उठ कर खड़ी हो गयी ।

शाहजादे के मुंह से आश्चर्य के साथ निकला 'रजिया! हैं तुम!

वह रजिया न थी । उसने शाहजादे की ओर गौर से देखा और धीरे से कहा 'आप!.....तुम.....आप.....

शाहजादा स्तंभित सा रह गया । भला वह कहीं इस स्त्री की शकल भूल सकता था ।'

पाठक! यह वही स्त्री थी जिसके साथ शाहजादे ने सफीना बीबी के घर में रात्रि व्यतीत की थी । आज एकाएक उसको यहां देख कर शाहजादा घबड़ा गया । वह स्त्री भी शाहजादे को यहां देख कर कुछ हैरत में आ गयी शाहजादा सलीम फिर वहां टिक न सके । फौरन कमरे से बाहर हो गये ।

आहट सुन कर रजिया वहीं आ गयी । बोली 'क्या शाहज़ादे साहब तशरीफ लाये थे लतीफा ?'

लतीफा और भी हैरत में डूब कर बोली 'शाहजादा सलीम! क्या वे शाहजादा सलीम थे ?'

मुसकुरा कर रजिया बोली 'तू हैरत में क्यों आ गयी लतीफा ?'

मगर लतीफा के मुंह से फिर कुछ निकला नहीं । वह शाहजादा सलीम के ही ध्यान में डूबी और उतरा रही थी ।

और.....

शाहजादा सलीम भी इसी पहेली में डूबे हुये आगरे की ओर चले जा रहे थे ।

[१२]

राज प्रसाद की सुविस्तृत वाटिका के दक्षिण भाग में एक छोटा सा मकान है । इस मकान को लोग राज्य-परिवार से संबंधित एक छोटी सी अतिथि-शाला कहते हैं । आज से लगभग १६-१७ वर्ष पूर्व वह स्थान गयासबेग नामक एक ईरानी को सपरिवार रहने के लिये दे दिया गया था । तब से वे ही लोग इसमें रहते चले आ रहे हैं ।

यमुना के निकट होने से इस वाटिका की छटा ही कुछ निराली सी है । शाहजादा सलीम आनंद और विलास-प्रिय व्यक्ति हैं । यह वाटिका उनकी क्रीड़ा-भूमि है । नाना प्रकार के पुष्पों से सुगंधित, सुन्दर फलों से पूरित तथा लहलहाती हुयी बेलों से सुशोभित यह वाटिका वास्तव में प्रमोद-कुंज ही सी है । स्थान-स्थान पर पशु-पक्षी अपने कलरव

से इस स्थान की सुषमा और प्रमोद-प्रियता को बढ़ाते रहते हैं। वाटिका के चारों ओर संगमरमर की खुशनुमा बारहदरियां बनी हुयी हैं जिनमें सुरा, सुन्दरी और संगीत तीनों के समन्वय की त्रिवेणी बहा करती थी। नन्दन-कानन सी यह वाटिका को देख कर हृदय मे स्वतः ही विलासिता जागृत हो उठती है।

इस वाटिका में किसी को प्रवेश करने की आज्ञा नहीं है। गयासवेग को इस वाटिका का प्रबंधक नियुक्त किया गया है। धुर उत्तर की ओर शाहज़ादे का सुन्दर सा महल बना हुआ है। यह महल बेगमों और दास-दासियों की चहल-पहल से गुंजरित रहता है। नाना प्रकार के आमोद-प्रमोद यहां होते रहते हैं।

पश्चिम की ओर स्थित बारहदरी की सीढ़ियों के पास तीन-चार नवयुवतियां, जिनमें से किसी की भी अवस्था १८ वर्ष से अधिक नहीं है, दौड़-दौड़ कर आंख-मिचौनी सी खेल रही हैं। पेड़ों पर जो रेशम की रस्सियों के झूले पड़े हुये हैं, कभी-कभी उन पर लम्बी पेंग लगा कर ये नवयुवतियां अप्सरा सी प्रतीत हो रही हैं।

अंत में थक कर ये चारों सुंदरियां बारहदरी मे पड़े हुये कालीन पर आकर लेट गयीं और धीरे-धीरे बातें करने लगीं।

एक सुन्दरी बोली 'मेरे बदन में तो एक अजीब सी सिरहन पैदा हो गयी है। जी चाहता है सो जाऊं।'

दूसरी अपनी मुसकान से विद्युत-छटा को भी लज्जित करती हुयी बोली 'सो जाने का तो अपना भी जी चाहता है। सारे बदन मे इस निगोड़ी मस्त हवा ने एक मीठा सा दर्द पैदा कर दिया है।'

तीसरी बोली 'बाहरी ! इस बगीचे की खुशबू तो अजीब है। जवानी का नशा सा चढ़जाता है।'

इस पर तीनों खिलखिला कर हंस पड़ीं। चौथी दूर पर बैठी पास ही में लगे हुये बेले को खिलते देख रही थी। इनकी खिलखिलाहट सुन कर कुछ चौंक सी पड़ी। हलकी सी मुसकुराहट के साथ बोली 'वाह जी ! तुम लोग भी खूब हो ! मैं तो डर गयी थी।'

दूसरी कुछ अधिक मुखर थी, बोली 'ओह्-खो, मैं तो समझी थी कि कोई आगया।'

तीसरी बोल उठी 'अच्छा, अगर इस वक्त हमारे शाहजादे साहब आ जायं तो क्या हो ?'

दूसरी झट बोल उठी 'क्या हो ? हम लोग चिड़ियों की तरह फुर्र से उड़ कर अपने अपने घोसलों में घुस जायेंगे। और क्या होगा ? क्यों मेहर ?'

चौथी नवयुवती का नाम मेहर था। बोली 'मैं तो कभी फुर्र से न उड़ूंगी। शहजादे का इतना डर है तो तुम लोगों को यहां आना ही न चाहिये।'

पहिली बोली 'अरी, तू जानती नहीं है। हमारे शाहजादे साहब ठहरे पहले सिरे के आशिक-मिजाज आदमी। उनके हत्थे पड़ कर छूटना जरा टेढ़ी खीर है।'

दूसरी बोली 'मैं तो कभी.....

और 'फुर्र' कर के चिड़ियां उड़ गयीं। तीनों नवयुवतियां भाग खड़ी हुयीं।

सामने शाहजादा सलीम खड़े हुये थे।

मेहर धीरे से उठ कर घर की ओर जाने लगी।

शाहजादे ने आज्ञा के तौर पर कहा 'ठहरो !'

मेहर रुक गयी।

शाहजादे ने धीरे से उसके पास पहुंच कर कहा 'आप कौन हैं ?'

मेहर ने इस धृष्टता को अक्षन्य समझते हुये कहा 'मगर आप कौन हैं यह पूछने वाले।'

शाहजादा, मेहर की रूप-छटा देख कर स्तब्ध रह गया था। मन ही मन में मुस-कुराता हुआ बोला 'मैं एक मर्द हूं; यह पूछना चाहता हूं कि इस बाग में आप किसकी इजाजत से आयीं ?'

मेहर ने कहा 'मुझे यहां आने के लिये किसी से इजाजत नहीं लेना पड़ती। आप यहां किसके हुक्म से आये ?'

शाहजादे सलीम ने कुछ आजिजी से कहा 'गुस्ताखी मुआफ हो परी, मैं शाहजादे की तलाश में यहां तक आया था।'

मेहर बोल उठी 'मर्दों को इस बाग में आने की मुमानियत है; आप जानते हैं कि शाहजादा सलीम आज कल आगरे में नहीं हैं।'

शाहजादा मेहर में खोया सा जा रहा था। बोला 'मगर आप से मुलाकात हो गयी यही क्या कम है ?'

मेहर जाने लगी। बढ़ कर शाहजादे ने उसका हाथ पकड़ लिया और कहा 'क्य आप थोड़ी देर भी न ठहर सकेंगी। मैं आप से कुछ बात करना चहता हूं।'

भवों पर बल डालते हुये मेहर ने कहा 'मैं किसी मर्द से बात नहीं करती चाहे वह.....'

शाहजादा हंस कर बीच ही में बोल उठा 'चाहे वह शाहजादा सलीम ही खुद क्यं न हो ?'

दृढ़ता के साथ मेहर ने कहा 'जी। मैं शाहजादा सलीम से डरती नहीं हूं। वे मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकते।'

मेहर जैसी सुन्दरी शाहजादा सलीम ने आज तक न देखी थी। वे मंत्र-मुग्ध की नाईं बोले 'मैंने सुना है कि शाहजादा सलीम खुद औरतों से डरते हैं। क्या यह ठीक है ?'

मेहर बोल उठी 'वे चाहे और किसी औरत से न डरते हों लेकिन मुझसे उनको डरना पड़ेगा।'

शाहजादा सलीम मेहर पर बुरी तरह मुग्ध थे। बोले 'लेकिन सलीम हरेक औरत को प्यार करते हैं।'

अल्हड़ सी मुद्रा में मेहर ने कहा 'तो फिर क्या वे मुझे भी प्यार करने लगेंगे ?'

शाहजादे ने कहा 'बेशक; उनका सा दिल फेंक आदमी तो तुमको देखते ही मर मिटेगा।'

मेहर आश्चर्य से शाहजादे की ओर देखने लगी।

शाहजादा सलीम बोला 'क्या तुमको इत्मीनान नहीं होता। शाहजादा सलीम तुमको प्यार करते हैं।'

मेहर भोली सी मुद्रा में बोली 'मुझको प्यार करते हैं ? अगर ऐसा है तो बड़ी अच्छी बात है। तब क्या मुझे भी उनको प्यार करना चाहिये ?'

सिर हिलाते हुये शाहजादे ने कहा 'बेशक। तुमको ऐसा ही करना चाहिये।'

मेहर सिर हिला कर थोड़ी देर खड़ी रही, फिर धीरे से एक ओर चल दी।

शाहजादा सलीम मुग्ध भाव से खड़े-खड़े उसके पग की गति को देखते रहे।

[१३]

रजिया के हृदय में अब शान्ति न थी। वह नहीं समझ पाती कि उसे पति से किस प्रकार के संबंध रखना चाहिये। वह भलीभांति जानती है कि हबीब खां से उसका विवाह हुआ है; संसार और कानून की दृष्टि से हबीब खां का उस पर अधिकार है। किन्तु यह सब क्या हुआ है ? शाहजादा सलीम उसका कौन है ?

किन्तु ये हबीब खां कौन है ? मरतबा, पैसा, उच्च-वेश तथा जवानी सभी कुछ तो उनके पास है ? फिर उसे शाहजादा सलीम की आवश्यकता ? यदि शाहजादा उसे अपनी नौकरी से पृथक कर दे तो क्या उसका पति भूखों मर जायगा ? हर्गिज नहीं वह भी सेना के एक उच्चाधिकारी का पुत्र है। क्या रजिया को अपने पति की निज की स्थिति पर संतोष न होगा ? और स्वयं वह क्या है ? कुछ भी तो नहीं। उच्चवेश की

झूठी प्रतिष्ठा लेकर ही तो उसके घर का सर्वनाश हुआ ह ? क्या वह शाहजादे की रखेली बन कर उस वेश की प्रतिष्ठा को ऊंचा कर सकेगी ? यह सब उसने क्या किया ?

उसे अपनी स्थिति और परिस्थिति पर रोना आ गया। आज उसकी सोहागरात है, किन्तु उसका पति उसके निकट आने का भी तो साहस नहीं कर पारहा है। यह उसका कैसा व्यवहार है ? बस शाहजादे की आंखों में ऊंचा रहने के लिये ही तो ऐसा कर रही है।

गुदगुदे और मूल्यवान बिस्तरे पर करवटें बदलते हुये आधी रात व्यतीत हो गयी, किन्तु रजिया को क्षण भर भी नींद न आयी।

और उधर —

हबीब खां भी करवटें बदल रहा है। वह भी चित्त में दुखी और उदास है। आज उसकी ब्याहता स्त्री उसकी नहीं है, यह क्या विडम्बना है ? उस पर पूर्ण अधिकार है और शाहजादा भी उसके बीच बाधक नहीं है फिर भी रजिया का यह व्यवहार कैसा ? नीच स्त्री है न ? पैसे को ही सब कुछ समझ रही है। आज सोहागरात है और मैं.....

हबीब खां बेचैनी के कारण उठकर बैठ गया। यह भी क्या जीवन है ? यह तो उसकी बेइज्जती है। वह आखिर इस मनोव्यथा मे फँस कैसे गया ? शाहजादे को ऐसा क्या अधिकार है जो.....किन्तु उसने तो स्वयं ही ऐसा समझौता किया है। फिर शिकायत क्यों ? किन्तु उसे तो ऐसा करना ही पड़ता। शाहजादे की आज्ञा टालने की किसमें हिम्मत है ? आफ्.....

वह उठकर कमरे में टहलने लगा।

हबीब खां कमजोर चरित्र का व्यक्ति है। शाहजादे के सामने बिना शर्त समर्पण करते रहने के कारण उसका निज का व्यक्तित्व शून्य सा हो गया है। किन्तु आज वह जिस स्थिति और परिस्थिति मे है उससे पड़कर किसका आत्म - सम्मान जागृत न हो पड़ेगा ? वह तो मनुष्य ही है और मनुष्य की मनोवृत्तियों में तूफानों का उमड़ना स्वाभाविक ही है।

हबीब खां जानता है कि वह शक्तिहीन है। शाहजादे सलीम के आगे उसकी कोई हस्ती नहीं है, फिर भी वह उमड़-घुमड़ कर अपने मन में शान्ति लाना चाहता है।

एकाएक उसे रजिया पर क्रोध आ गया। यह कैसी स्त्री है ? आज तो शाहजादा सलीम दिल्ली में नहीं है। फिर आज उसका यह शुष्क व्यवहार कैसा ? इस सोहागरात को वह बड़े आनन्द से मना सकती थी ? फिर ऐसा क्यों ? शायद वह अपनी अपेक्षा मुझे बहुत नीचा समझती है, किन्तु गिरा हुआ कौन है ? वह या रजिया ?

हबीब खां ने निश्चित किया कि दोनों ही गिरे हुये हैं। दोनों ही का नैतिक पतन है।

आधी रात व्यतीत हो गयी है किन्तु हबीब खां की आंखों में नींद नहीं है।

अंत में उसने निश्चय किया कि वह रजिया से मिलकर एक बार फिर परिस्थिति साफ़ करने की चेष्टा करे। वह उस पर अपना अधिकार सिद्ध करेगा। यह भी क्या ?

पति - पत्नी, आज के विवाहित, एक घर में, बिलकुल स्वतंत्र ! फिर यह क्या ?

हबीब खां तड़प उठा। यह असह्य है। वह.....वह.....वह.....लेकिन वह कुछ नहीं कर सकता।

मुगल राजकुमारों की रंगीनियों ने एक सद्गृहस्थ के जीवन में क्या तूफान खड़ा कर दिया है। क्या शर्त है ? हबीब खां का जीवन भी कोई जीवन है ? उसका विरोध उसे शाही क्रोधानल में पतंगे के समान भस्म कर देगा।

'किन्तु वह रजिया से एक बार बात अवश्य करेगा।' यह सोचकर उसने कमरे का दरवाजा खोला और बाहर आ गया।

उसके क़दम धीरे - धीरे रजिया के कमरे की ओर बढ़ने लगे। ज्यों-ज्यों उसके क़दम कमरे के निकट आते गये त्यों-त्यों उसके मस्तिष्क में एक कमजोरी सी बढ़ती गयी। वह क्या कहेगा ? एक मर्द होकर अपनी ही नामर्दगी के सम्बन्ध में क्या मुँह लेकर बात कर सकेगा। छिः, उसको तो अपना मुँह भी दिखलाने में शर्म आयेगी।

रजिया के कमरे के द्वार के समीप जाकर वह रुक गया। दरवाजे पर धक्का देने का उसका साहस न होता था। किन्तु उसे डर क्या है ? शाही आज्ञा के विरुद्ध तो वह कोई काम करने जा नहीं रहा है ? शाहज़ादे ने उसे रजिया से भेंट करने से मना भी नहीं किया। फिर—

उसने धीरे से द्वार थपथपाया। दो - तीन बार थपथपाते ही द्वार खुल गया। कमरे में एक फानूस जल रहा था। हबीब खां ने देखा रजिया द्वार पर खड़ी है। उसका हृदय धड़कने लगा। हाय री परिस्थिति ! पति - पत्नी के समीप आने में अकारण ही डर रहा है। वह कांपने सा लगा।

तभी रजिया ने मीठे स्वर में कहा 'आप ! अंदर आजाइये।'

हबीब साहस करके अंदर आगया। रजिया ने किवाड़ बंद कर लिये।

वह पलंग पर बैठ गयी। हबीब खां अब तक खड़ा हुआ था। रजिया ने कहा बैठ जाइये।'

हबीब धीरे से पलंग पर बैठ गया।

दोनों थोड़ी देर तक मौन बैठे रहे। अंत में सन्नाटे को भंग करते हुये रजिया ने कहा 'कहिये' इतनी रात को आप इधर कैसे आये ?'

हबीब का साहस फिर जवाब देने लगा। वह हिम्मत करके बोला 'मैं देखना चाहता था कि आपको कोई तकलीफ तो नहीं है।'

रजिया मन ही मन हंसी। बोली 'नहीं, मुझे किसी किस्म की तकलीफ नहीं है।'

हबीब जाने के लिये धीरे से उठ खड़ा हुआ। रजिया बोली 'आप जा रहे हैं ?'

हबीब फिर खड़ा हो गया। रजिया बोली 'बैठिये।'

हबीब फिर बैठ गया। थोड़ी देर तक दोनों चुप रहे, फिर रजिया ने कहा 'आज हम लोग एक अजीब व गरीब फिजा में मिल रहे हैं। मैं नहीं जानती कि इसमें कुसूर किसका है, फिर भी.....'

और वह चुप हो गयी। साहस करके हबीब खां ने कहा 'सारा कुसूर मेरा है रजिया। मैंने अपनी हरकतों से तुम्हें जलील किया है। मैं तुम्हारे पास बैठने लायक भी नहीं हूं, मैं चला।'

कह कर जल्दी से हबीब उठ खड़ा हुआ। रजिया ने उठ कर उसका हाथ पकड़ लिया और बोली 'यह गलत है। मैं भी.....'

और वह रो पड़ी। हबीब ने अपने हाथ से उसके आंसू पोंछते हुये कहा 'तुम ... करो रजिया। जो होना था सो हो गया।'

रजिया उसके वक्षस्थल मे सिर छिपा कर रोने लगी। हबीब खां को थोड़ी शान्ति मिली। दोनों धीरे से पलंग पर बैठ गये।

रजिया कहने लगी 'मैं जिस रास्ते पर जाना चाहती हूं वह मुझे अब आसान नजर नहीं आता।'

उसने एक लम्बी सी सांस ली और चुप हो गयी।

हबीब खां ने धीरे से कहा 'अब जो कुछ हो गया है उससे पीछे लौटने में हम लोगों की रक्षा नहीं है, लेकिन फिर भी हम अगर मिल कर चलें तो अपनी जिन्दगी को थोड़ा सा पुरलुत्फ बना सकते है।'

रजिया ने उत्तर दिया 'मैं धोखे में थी। बौना हो कर चांद छूना चाहती थी। लेकिन, अफसोस,.....'

हबीब प्रेम से उसके बालों पर हाथ फेरता हुआ बोला 'तुम अफसोस न करो रजिया। मैं तुम्हारे लिये सभी तरह की कुर्बानियां करने को तैयार हूं। तुम्हें जिसमें आराम मिले मैं वही करूंगा। उसी में मुझे भी आराम मिलेगा।'

और एक सांस लेकर वह खड़ा हो गया। रजिया ने उसका हाथ पकड़ कर बिठलाते हुये कहा 'तुम मेरे साथ इस तरह का बर्ताव न करो प्यारे। मैं तुम्हारी हूं—मैं तुम्हारी हूं।'

हबीब खां के मुंह से निकला 'और शाहजादा सलीम ?'

रजिया कुछ स्फुट-स्वर में बोली 'जहां तक मेरे और आपके रिश्ते का ताल्लुक है वहां शाहजादा सलीम कोई चीज नहीं है।'

हबीब खां आश्चर्य से उसके मुंह की ओर देखने लगा।

भावावेश में रजिया पति से चिपटती हुयी बोली 'हम एक हैं—हम एक हैं। मौका पड़ने पर—वक्त आने पर—

हबीब ने कहा 'मगर......

रजिया कह पड़ी 'अभी इन बातों को रहन दो। वक्त आने पर हम मिल कर तय करेंगे कि शाहजादे के साथ हम लोगों का क्या सुलूक होगा। आज हम लोग अपनी सोहागरात मनावेंगे।'

हबीब ने उसे अंक में भर लिया।

[१४]

आज शाहजादे के महल में ईद का महोत्सव मनाया जा रहा है। महल का प्रत्येक कोना ...... से जगमगा रहा है।

महल का प्रमुख कमरा विशेष रूप से सजाया गया है। इसमें सुन्दरियों का जमघट लगा हुआ है। ये उन आला सरदारों की औरतें, बहिनें और लड़कियां हैं जो राज्य के ऊंचे-ऊंचे पदों पर आसीन है। इन्हें ईद के दिन रात भर शाहजादे के महल में रह कर आमोद-प्रमोद में भाग लेना पड़ता है। बेगमों को खुश करना पड़ता है।

इस प्रमुख कमरे के ऊपर झरोखों में स्वयं शाहजादा सलीम अपने मित्रों के साथ बैठ कर इन रंगरेलियों का आनंद लते हैं।

इन्हीं झरोखों में से एक में बैठे हुये शाहजादा सलीम अपने मित्र दिलदार खां के साथ इन संभ्रान्त कुलों की सुन्दरियों का नृत्य और आमोद-प्रमोद देख रहे हैं।

धीरे से दिलदार खां के कान के पास अपना मुंह ले जाकर शाहजादे ने कहा 'सब्ज पोशाक वाली उस नाजनी को जानते हो दिलदार खां। उसकी खूबसूरती तो गजब ढा रही है।'

सिर हिलाते हुये दिलदार खां ने कहा 'समझ गया, समझ गया। वह शेख कुतुब खां की बीबी है हुजूर। क्या कहना है इसके।'

शाहजादे ने कहा 'शेख कुतुब खां कौन ?'

दिलदार खां ने उत्तर दिया 'एक अदना सी हस्ती का, जहांपनाह की मेहरबानी से शाही महल का मुन्तजिम मुकर्रर हो गया है। निहायत खड़ूस किस्म का। यह औरत उसके लिये 'ऊंट के गले में बिल्ला' सी है। वह तो हुजूर के लायक थी।'

शाहजादा प्रसन्न होकर बोला 'मुझे इसकी जरूरत है खां साहब।'

दिलदार खां बोल उठा 'यह कौन बड़ी बात है हुजूर। उस पर आपकी नजर पड़ना कुतुब खां और उसकी बीबी के लिये वायसे फ़ख्र समझना चाहिये।'

शाहजादा बोल उठा 'इस काम में जल्दी करना चाहिये।'

दिलदार खां ने कहा 'तो इस काम को ठीक हुआ ही समझें हुजूर। मैं अभी कुतुब खां को आपके सामने पेश करता हूं।'

× × × ×

आधीरात को महल मे अपनी बुलाहट सुन कर कुतुब खां के पैरों की धरती खिसक गयी।

उसने बड़ी आजिजी के साथ दिलदार खां से कहा 'क्या बात है खां साहब ? आखिर इतनी रात को मेरी क्या जरूरत पड़ गयी है ?'

मुसकुराते हुये दिलदार खां ने कहा 'घबड़ाने की बात नहीं है कुतुब खां। शाहजादे के पास जाने में तो किसी को भी डरना न चाहिये। वहां पहुँच कर तो फायदा ही होता है।'

कुतुब खां सीधे-सादे सज्जन व्यक्ति थे। तैयार होकर दिलदार खां के साथ चल दिये।

इस वक्त शाहजादा सलीम एक सजे सजाये शयन-कक्ष मे आ गये थे। दिलदार खां कुतुब को लिये हुये बेरोक-टोक वहां पहुंच गये।

शाहजादा सलीम गाव तकिये पर आराम से टेहनी लगाये लेटे हुये थे।

कुतुब खां अदब से सामने खड़े हो गये।

शाहजादे ने कहा 'अच्छे तो हो कुतुब खां ?'

डर कर अभिवादन करते हुये कुतुब खां ने कहा 'जी हुजूर।'

शाहजादे ने दिलदार खां की ओर देखा। उनका अभिप्राय समझ कर दिलदार खां बोल उठे 'हिन्दुस्तान के वली अहद शाहजादा सलीम तुमसे बहुत खुश हैं खां साहब।

फौरन शाहजादा बोल उठे 'कुतुब खां को एक हजार गिन्नियां इनाम में दी जायें।'

कुतुब खां की आंखों में चमक सी आ गयी। उन्होंने झट लम्बा आदाब बजाते हुये कहा 'हुजूर की परवरिश है। बन्दे के लिये क्या हुक्म होता है ?'

शाहजादा सलीम ने फिर दिलदार खां की ओर देखा और मुसकरा दिये।

दिलदार खां कुतुब का हाथ पकड़ कर उसे बाहर ले गये और बोले 'तुम्हारी क़िस्मत खुल गयी है खां साहब। अभी अपनी सब्ज परी को लाकर शहजादे की नजर करो।'

कुतुब खां भौचक्के से होकर दिलदार खां की ओर देखने लगे। निडर होकर दिलदार खां ने कहा 'मेरी तरफ क्या देख रहे हो ? जल्दी करो। काश तुम्हारी तरह मैं भी क़िस्मतवर होता।'

कुतुब खां कांपते हुये बोले 'मैं आपकी बात का मतलब नहीं समझा खां साहब ?'

एक हलका सा ठहाका लगाकर दिलदार खां ने कहा 'न समझने की एक कही कुतुब खां तुमने। जाकर घर में ईद मनाओ क्योंकि शाहजादे की नजर तुम्हारी बीबी पर पड़ गयी है। वह आज उन्हें पसंद आ गयी है।'

कुतुब खां के पसीना आ गया था। उसे स्वप्न में भी ऐसी आशा न थी। वह जानता था कि उसकी बीबी हुस्न आरा कितनी पाक और नेकचलन है। स्वयं कुतुब खां भी निहायत नेक और सीधा-सादा था। वह जानता था कि हुस्न आरा कभी इस प्रस्ताव को स्वीकार न करेगी।

वह बोला 'मगर.....'

दिलदार खां स्फुट-स्वर में बोल उठे 'यहां किसी का 'अगर-मगर' पानी नहीं पीने पाता। चुपचाप जाकर उसे शाहजादे के पास पहुँचा आओ। तुम शाहजादा सलीम के गुस्से को जानते ही हो ? जाओ।'

कुतुब खां धीरे से कदम बढ़ाता हुआ अपनी बीबी की तलाश में चल दिया।

दिलदार खां ने उसे सुनाकर कह दिया 'आध घंटे के अन्दर तुम्हे मय बीबी के यहां आ जाना है खां साहब। समझ लेना यह शाही हुक्म है।'

दिलदार खां कमरे में वापिस आ गये। शाहजादे ने एक लम्बी सांस लेकर कहा 'कितनी देर लगेगी उसे आने में मेरे दोस्त ?'

दिलदार खां मुसकुराता हुआ बोला 'अभी आध घंटे के अंदर।'

[१५]

हुस्न आरा आंसू गिराती हुयी बोली 'इस बेइज्जती से तो मर जाना बेहतर है मेरे शौहर। इस जुल्म की क्या कहीं फरियाद नहीं है ?'

कुतुब खां के चेहरे से सारा रक्त गायब सा था। मुर्दों की सी भाषा में वह बोला 'मैं क्या करूँ हुस्नआरा। इस वक्त जिन्दगी और मौत का सवाल, आ गया है। या खुदा !'

कुतुब खां निष्प्रभ सा होकर वहीं बैठ गया। हुस्नआरा अपने प्रति अपने शौहर का प्रेम समझती थी। उसके निकट पहुंच कर आंसू गिराते हुई बोली 'तुम्हारी जिन्दगी के लिये मैं अपना सब कुछ कुर्बान कर सकती हूँ। उठो, मुझे जहां चाहो ले जा सकते हो।'

और वह फूट कर रो पड़ी। कुतुब सिर झुकाये चुपचाप बैठा रहा। हुस्न आरा बोली 'इसमें तुम्हारा क्या कुसूर है प्यारे। मुगल दरबार की रंगीनियां का हम लोग शिकार हो रहे हैं।'

कुतुब बैठा रो रहा था। हुस्न आरा कुछ कहने जा रही थी कि किसी ने दरवाजे पर थाप दी। किवाड़ खुल गये।

दिलदार खां ने कर्कश स्वर में कहा 'मौत तुम्हारे सिर पर खेलती मालूम पड़ रही है खां साहब। तुम अभी जानते नहीं हो......'

और तभी आगे बढ़कर हुस्न आरा ने कहा 'उनसे कुछ कहने की जरूरत नहीं है आपको। चलिये, मैं चल रही हूँ।'

चलते वक्त उसने पति से कहा 'आप और ज्यादा परेशान न हों। इसे भी खुदा की ही मर्जी समझें। घर चलकर आराम कोजिये, मैं आजाऊंगी।'

और वह दिलदार खां के साथ चल दी।

दिलदार खां ने रास्ते में मुसकुराकर कहा 'आपकी बदौलत अब खां साहब कोई बहुत ऊँचा ओहदा पाजायेंगे।'

गंभीर भाव से हुस्न आरा ने उत्तर दिया 'जी हां। यह आपकी मेहरबानी है।'

दोनों फ़िर कुछ न बोले। शाहजादे के कमरे के पास पहुंच कर दिलदार खां ने कहा 'आप अंदर चली जाइये। अब मेरा काम खत्म हो गया है।'

हुस्न आरा ठिठक कर खड़ी हो गयी। दिलदार खां बोला 'आप रुक क्यों गयीं? जल्दी जाइये, वहां शाहजादे साहब आपके इश्क मे तड़प रहे हैं।'

हुस्न आरा ने क्रोध और घृणा भरी दृष्टि से दिलदार खां की ओर देखा और कहा 'आपका काम खत्म हो गया है। अब आप जा सकते हैं।'

दिलदार खां ने सिर हिलाते हुए कहा 'मेरा काम अभी खत्म नहीं हुआ है। आपको शाहजादे के पहलू मे पहुंचा कर ही मेरा काम खत्म होगा मेरी चिड़िया। दिलदार खां ने धूप में बाल सफेद नहीं किये हैं।'

हुस्न आरा ने एक बार फिर घृणा की दृष्टि से उसकी ओर देखा और एक सांस लेकर अन्दर चली गयी।

शाहजादे की मुराद पूरी हो गयी थी।

× × × ×

सबेरे अपना सब कुछ लुटा कर जब हुस्न आरा डोली म अपने घर पहुंची तो उसने द्वार पर ही सुन लिया कि उसके प्यारे शौहर कुतुब खां ने रात ही में खुदकुशी कर ली थी।

हुस्न आरा दिन भर तड़पती रही। शाम को वह चुपचाप घर से निकली और अपने को यमुना की लहरों में समर्पित कर दिया।

एक 'छपाक' शब्द हुआ, और सब शान्त।

जब शाहजादे को यह मालूम हुआ तो उसके मुंह से निकला 'ओफ्' कितनी दर्दनाक कहानी है। बेचारी बड़ी नेक थी।'

किन्तु यह एक साधारण सी भी घटना नहीं समझी गयी।

[६]

शाहजादा सलीम की विलासप्रियता की कहानियां सुनते-सुनते सम्राट अकबर के कान थक गये थे। उन्होंने महाराज मानसिंह को बुला कर कहा 'शाहजादा सलीम को बाहर भेजने की क्या व्यवस्था की आपने महाराज।'

महाराज मानसिंह क्षण भर चुप रह कर बोले 'सम्राट की जैसी आज्ञा हो।'

बादशाह ने कह दिया 'सलीम के बारे में काफी शिकायतें आ रही हैं मानसिंह। उसे तो थोड़े दिनों के लिये बाहर भेजना ही होगा।'

कुछ सोच कर महाराज मानसिंह बोले 'अगर शाहजादे को बंगाल की तरफ भेज दिया जाय.....'

बादशाह बीच ही मे बोल उठे 'जरूर, जरूर, शाहजादे सलीम को कल ही बंगाल रवाना किया जाय।'

मानसिंह ने कहा 'सम्राट की जैसी आज्ञा।'

बादशाह चुप होकर कुछ सोचने लगे। महाराज मानसिंह बोले 'जहांपनाह, फिक्र न करें। मानसिंह के रहते शाहजादे का बाल भी बांका न कर सकेगा।'

एक सांस लेकर अकबर चुप हो गया।

थोड़ी देर सन्नाटा रहा, फिर सहसा चोपदार ने आकर अभिवादन किया और एक ओर खड़ा हो गया।

बादशाह ने पूछा 'क्या है ?'

चोपदार नेझुक कर कहा 'गयासबेग जहांपनाह को सलाम करना चाहते हैं।'

कुछ सोच कर अकबर ने कहा 'आने दो।'

महाराज मानसिंह जाने को उद्यत हुये, किन्तु बादशाह ने कहा 'आप अभी ठहरें

महाराज मानसिंह।'

मानसिंह चुपचाप बैठे रहे।

थोड़ी देर में एक हृष्ट-पुष्ट अधेड़ ने आकर अभिवादन किया।

प्रसन्न होकर बादशाह ने कहा 'अच्छे हो मिर्जा गयासबेग।'

मिर्जा गयासबेग ने अभिवादन करते हुये कहा 'जहांपनाह की मेहरबानी से सब खैरियत है।'

और वह चुप हो गया।

अकबर ने कहा 'क्या कहना चाहते हो गयास ?'

गयासबेग ने एक बार महाराज मानसिंह की ओर देखा और चुपचाप खड़ा रहा।'

बादशाह ने उसका अभिप्राय समझ कर कहा 'महाराज मानसिंह के सामने तुम कह सकते हो गयासबेग। मानसिंह से कोई भी बात छिपी नहीं है।'

गयासबेग क्षण भर चुप रहा फिर बोला 'शाहजादा सलीम के बारे मे ही कुछ अर्ज करना चाहता हूं।'

अकबर समझ गया था कि शाहजादे के बारे मे कुछ शिकायत की ही बात होगी। बोले 'तुम सब कुछ खुलासा कह सकते हो गयासबेग। तुम्हारे साथ इंसाफ किया जायगा।'

गयास कुछ लज्जा सी अनुभव कर रहा था। धीरे से बोला 'मेरी बेटी मेहरुन्निसा.....

और वह फिर चुप हो गया।

अकबर ने कहा 'मेहरुन्निसा के साथ क्या कोई बेजा हरकत की है सलीम ने ?'

इस समय बादशाह की आंखें कुछ क्रोध से लाल हो चली थीं। गयास डरता हुआ बोला 'मैं क्या कहूं जहांपनाह से.....'

बादशाह ने स्फुट-स्वर से कहा 'यह शाही हुक्म है गयास। फौरन सब बातें खुलासा कहो।'

गयास धीरे से बोला 'शाहजादे की नजर मेहरुन्निसा पर अच्छी नहीं है जहांपनाह।'

बादशाह के चेहरे पर स्पष्ट क्रोध के चिन्ह दिखलायी पड़ने लगे। वे मानसिंह की ओर देखते हुये बोले 'इन सब बातों को दूर करने के लिये कुछ न कुछ तरकीब निकालनी ही पड़ेगी मानसिंह।'

मानसिंह अब तक चुप थे। अदब के साथ एक सांस लेकर बोले 'मामला इतना ही

नहीं है जहांपनाह। यह किस्सा बहुत आगे बढ़ चुका है।'

बादशाह आश्चर्य के साथ महाराज मानसिंह के मुंह की ओर देखने लगे। गयास सिर झुकाये खड़ा था।

बादशाह ने कहा 'मिर्जा गयासबेग, तुम अब जा सकते हो। तुम्हारे मामले की जांच की जायगी, मुजरिम को चाहे वह शाहजादा सलीम ही क्यों न हो सजा दी जायगी।'

गयास सिर झुका कर चला गया।

उसके जाने के बाद बादशाह ने महाराज मानसिंह की ओर देखा और कहा 'मुझे तो आपने अब तक इस बारे में कुछ बताया नहीं ?'

महाराज मानसिंह अत्यंत गंभीर होकर बोले 'आज मैं जहांपनाह के पास इस संबंध में ही कुछ निवेदन करने आया हूं। मामला बहुत आगे बढ़ गया है। शाहजादा सलीम ने मेहरुन्निसा के साथ शादी करने की पूरी ठान ली है।'

अकबर के चेहरे पर फिर क्रोध के चिन्ह दिखलायी दिये। उसने सिर हिलाते हुए कहा 'अच्छा ! सलीम को इतनी जुर्रत हो गयी ?'

महाराज मानसिंह ने कहा 'यह मसला बहुत संगीन है जहांपनाह। शायद शाहजादे सलीम को बुला कर समझाना भी बेकार रहे।'

अकबर महाराज मानसिंह के चेहरे की ओर देखने लगा। महाराज मानसिंह कहते गये 'अगर कोई जरिया इस मसले को खत्म करने का हो सकता है तो—'

कहते कहते महाराज मानसिंह रुक गये। अकबर ने कहा 'आप रुक क्यों गये ? हमारे और आपके बीच में हर तरह की बातचीत हो सकती है। आप सल्तनते मुगलिया के सबसे बड़े वजीर और मेरे जिगरी दोस्त हैं।'

महाराज मानसिंह ने कहना प्रारम्भ किया 'इस मेहरुन्निसा के साथ शाहजादे सलीम की शादी कर देना ही ठीक होगा।'

बादशाह फौरन बोल उठे 'यह आप क्या कह रहे हैं महाराज मानसिंह। एक मामूली परदेशी की लड़की की हिन्दुस्तान के वली अहद के साथ शादी ! यह कभी नहीं हो सकता।'

महाराज मानसिंह चुप रहे। अकबर ने कहा 'यह खानदाने मुगलिया की इज्जत का सवाल है। इस अदना से आदमी गयासबेग को इतना ऊंचा मरतबा नहीं बख्शा जा सकता।'

मानसिंह फिर भी चुप रहे। उन्हें चुप देख कर अकबर ने कहा 'आपकी क्या सलाह है मानसिंह ?'

अब मानसिंह बोले 'जहांपनाह का कहना दुरुस्त है, लेकिन शाहजादा सलीम आसानी से यह बात मानने को तैयार न होंगे।'

स्फुट-स्वर में अकबर ने कहा 'आज आप कैसी बातें कर रहे हैं नाराज मानसिंह? क्या सलीम की इतनी जुर्रत मैं कभी बर्दाश्त कर सकता हूं। मैं शाहजादे को वह सजा दूंगा कि वह जिन्दगी भर याद रक्खेगा।'

महाराज मानसिंह चुप हो गये। अकबर ने चोबदार को आज्ञा दी 'सलीम को हाजिर करो।'

अभिवादन करके चोबदार चला गया।

अकबर ने कहा 'मैं सलीम से जबाब तलब करूंगा।'

थोड़ी ही देर में शाहजादे सलीम ने कमरे में प्रवेश किया तथा पिता को अभिवादन करके एक ओर खड़ा हो गया।

अकबर क्षण भर चुप रहा और फिर बोला 'मुझे उम्मीद है कि तुम जिन्दगी में ऐसा कोई काम न करोगे जिससे खानदाने मुगालिया की इज्जत में धब्बा लगे।'

सलीम दृढ़ता के साथ बोला 'शायद मैंने कभी ऐसी कोशिश नहीं की अब्बाजान। मुझे अफसोस है कि मेरे किसी दुश्मन ने——'

अकबर फौरन बोल उठा 'और गयासबेग की बेटी मेहरुन्निसा ?

सलीम क्षण भर चुप रह दृढ़ स्वर में बोला 'मैं उसके साथ अपनी शादी करने की इजाजत मांगना चाहता हूं अब्बाजान।'

अकबर की त्यौरियां चढ़ गयीं थीं। वह बोल उठा 'वह इजाजत तुम्हें कभी नहीं मिल सकती सलीम।'

सलीम समझ रहा था कि व्यर्थ में अब्बाजान उसके मार्ग में रोड़ा अटका रहे हैं। बोला 'लेकिन इसकी वजह ?'

अकबर ने स्फुट-स्वर में उत्तर दिया 'लेकिन मुझसे किसी भी बात की वजह पूछने वाले तुम कौन हो सलीम ? तुमने यह गुस्ताखी कहां से सीख ली।'

सलीम का बांध टूट रहा था। वह बोला 'मैं अब बच्चा नहीं हूं अब्बाजान। अपना भला बुरा समझ कर ही.....'

क्रोध के स्वर में अकबर ने चिल्लाकर कहा 'चुप रहो। तुम बेवकूफ हो। आज

मुझे अच्छी तरह इत्मीनान हो गया कि तुम मेरी सलतनत को चला सकने में कितने निकम्मे हो। तुम गद्दी - नशीन होने लायक़ नहीं।'

सलीम ने क्रोध से गुर्राकर एक बार पिता की ओर देखा और कहा 'सलतनतें मांगने से नहीं मिला करतीं अब्बाजान। तलवार की ताक़त.....'

अकबर के लिये यह असह्य था। वह कुछ बड़ी बात कहने के लिये उठने ही वाला था, कि महाराज मानसिंह बोल उठे 'पिता - पुत्र का यह वाद - विवाद अच्छा नहीं जहांपनाह। सलीम समझदार लड़का है; उम्मेद है कि वह आपके इरादों को अच्छी तरह समझ गया होगा। शाहजादे, आप जाकर आराम कीजिये।'

अकबर चुप हो गया। सलीम धीरे से कमरे के बाहर हो गया।

उसके जाने के बाद धीरे से महाराज मानसिंह ने कहा 'जहांपनाह, परेशान न हों। गयासबेग या उसकी लड़की मेहरुन्निसा को यहां से हटा देने से ही काम चल जायगा।'

कुछ सोचकर अकबर ने कहा 'आप ठीक ही फरमा रहे हैं मानसिंह साहब। मगर सलीम के जिद्दी मिजाज से मैं अच्छी तरह वाक़िफ़ हूँ। मेहरुन्निसा को कहीं भी भेज देने से भी वह बाज न आयेगा। इससे तो गयासबेग की मुसीबतें और भी बढ़ जायेंगी।'

महाराज मानसिंह बोले 'तो फिर.....'

अकबर ने गंभीर होकर कहा 'मैं किसी बहादुर सरदार के साथ मेहरुन्निसा की शादी कर देना चाहता हूँ। उसे रुतवा और मरतबा बख्श कर कहीं दूर भेज दिया जाय।'

मानसिंह ने उत्तर दिया 'जहांपनाह ने ठीक ही सोचा है।'

अकबर फिर बोला 'और सलीम को किसी तरह चंद महीनों के लिये हटा दिया जाय।'

महाराज मानसिंह ने सम्राट की बात का समर्थन करते हुये कहा 'पहिले शाहजादे को हटा दिया जाय, और फिर बाद में मेहरुन्निसा की शादी करके उसे बहुत दूर भेज दिया जाय।'

[१७]

शाहजादा सलीम साधारण व्यक्ति न था। वह जानता था कि थोड़े ही दिनों में हिन्दुस्तान का शासन उसी के हाथ में होगा। अकबर के मित्र तथा निकटवर्ती लोग सलीम को केवल विलास - प्रिय और निकम्मा ही समझते थे। उन्हें विश्वास होगया था कि देश का शासन सलीम के हाथ में कभी सुरक्षित न रह सकेगा। इसके अतिरिक्त सलीम के स्वभाव से ये लोग डरते भी थे। स्वयं महाराज मानसिंह सलीम को गद्दी देने के पक्ष में न थे। वे चाहते थे कि उनकी बहिन से उत्पन्न स्वयं सलीम का बड़ा पुत्र

खुसरो हिन्दुस्तान का बादशाह हो। इस सम्बन्ध में एक बहुत बड़ा षड़यन्त्र भी चल रहा था।

अकबर सब कुछ समझता था किन्तु वह चुप था। वह सलीम को प्राण से भी अधिक प्यार करता था और इस बात की सतत चेष्टा में रहा करता था कि किसी तरह सलीम राज - काज में मन लगाये। किन्तु ज्यों - ज्यों सलीम बड़ा होता गया त्यों - त्यों उसकी विलासिता बढ़ती ही गयी। वह इस षड़यन्त्र के संबंध में कुछ न जानता था। महाराज मानसिंह को अपना हितैषी समझ रहा था।

पहिले तो सलीम ने बड़े धैर्य्य से काम लिया। वह जानता था कि थोड़े ही दिनों में तख्तो-ताज उसके ही पैरों पर लोटेगा, किन्तु ज्यों - ज्यों दिन व्यतीत होते गये, त्यों-त्यों कदाचित् अकबर की उम्र भी बढ़ती चली गयी। सलीम घबड़ा उठा। कब तक वह प्रतीक्षा में रहेगा ?

महाराज मानसिंह भला कब पसंद कर सकते थे कि सलीम आगरे में रहे। वे चाहते थे कि वह पिता से दूर ही रहे, जिससे उनके षड़यंत्र की सफल होने का अवसर मिल सके। अस्तु —

इतिहास से पता चलता है कि अकबर ने मेहरुन्निसा का विवाह शेर अफगन से करके उन दोनों को बंगाल रवाना कर दिया। सलीम को सेना लेकर इलाहाबाद की ओर जाने की आज्ञा दी गयी।

सलीम को इलाहाबाद पहुंच जाने पर मेहरुन्निसा की शादी और महाराज मानसिंह के षड़यंत्र का पता चला। वह इन समाचारों को सुनकर आग - बबूला हो गया, किन्तु पिता के रहते वह निरुपाय था। वह उपाय खोजने लगा।

इधर अकबर भी इस षड़यंत्र को पनपता देख परेशान होकर घबड़ा उठा। किन्तु अपनी इस वृद्धावस्था में वह भी निरुपाय सा था। साम्राज्य की विशाल सेना महाराज मानसिंह के आधीन थी और महाराज मानसिंह शाहजादे खुसरो को ही गद्दी - नशीन देखना चाहते थे। अकबर इसी चिन्ता में बीमार पड़ गया। उसने बार - बार सलीम को बुलवा भेजा, किन्तु सलीम अब सतर्क था, वह जानता था कि वह यदि आगरे पहुंच गया तो वह निश्चय ही महाराज मानसिंह के षड़यंत्र का शिकार हो जायगा।

अंत में उसने पिता के विरुद्ध विद्रोह करने का निश्चय किया। वह जानता था कि आगरे में भी उसके समर्थकों की कमी नहीं है। महाराज मानसिंह के आधीन सेना में उसके प्रश्न को लेकर फूट पड़ जायगी। इसके अतिरिक्त इलाहाबाद में भी उसके पास एक सुदृढ़ सेना थी। उसे अपनी विजय पर पूर्ण विश्वास था।

विद्रोह का झंडा खड़ा करने के पूर्व उसने एकबार दिल्ली जाने का निश्चय किया। दिल्ली के सरदारों और दिल्ली स्थित सेना में उसका अभी प्रभाव था। वह दिल्ली की ओर रवाना हो गया। उसने सोचा कि वह सर्व प्रथम दिल्ली पर ही कब्जा करके अपने को सम्राट घोषित कर देगा।

शाहजादे सलीम को एकाएक दिल्ली आया देख कर सबसे अधिक घबड़ाहट हबीब खां को हुयी। वह रजिया के साथ सुखपूर्वक रह रहा था। हबीब और रजिया घुल-मिल कर एक हो गये थे और रजिया ने दृढ़ निश्चय कर लिया था कि वह प्राण देकर भी शाहजादे से अपनी रक्षा करेगी। वह हबीब खां की वफादार पत्नी बनकर रहने का विचार कर चुकी थी।

हबीब खां जानता था कि अभी शाहजादा सलीम जल्दी दिल्ली न आ सकेगा। महाराज मानसिंह के षड़यंत्र से भी वह भली भांति परिचित था। उसने सोचा कि कदाचित् शाहज़ादे सलीम को दिल्ली आने की फुरसत ही न मिलेगी।

शाहजादे सलीम ने महल में पहुंच कर हबीब खां और रजिया के इस नये रंग-ढंग को देखा और सभी कुछ समझ लिया। उसने लाख चेष्टा की किन्तु रजिया ने उसके निकट आने से साफ इंकार कर दिया।

सलीम ने क्रोधसे ओठ चबाकर कहा 'अच्छा; चींटे के भी पर निकल आये हैं।'

हबीब बहुत ही भयभीत था। वह जानता था कि शाहजादा इस समय परेशानी में है और इस दशा में उसका क्रोध कितना प्रबल हो सकता है। उसने रजिया को बहुत समझाया किन्तु रजिया ने साफ इंकार कर दिया। वह निराश होकर अपनी मौत की घड़ियां गिनने लगा।

किन्तु शाहजादा सलीम इस समय दूसरे ही चक्कर में था। हबीब खां का पिता कासिम खां इस समय दिल्ली स्थित मुगल सेना का सेनापति था। वह इस समय हबीब खां को दंडित करके कासिम खां को अपने विरुद्ध न करना चाहता था।

दूसरे ही दिन शाहजादे ने कासिम खां को हाज़िर होने की आज्ञा दी, किन्तु कासिम खां ने आने से साफ इंकार कर दिया। बात यह थी कि कासिम खां महाराज मानसिंह से मिला हुआ था। वह तो इस उधेड़ - बुन में था कि आगरे में गड़बड़ होते ही दिल्ली पर अधिकार जमा ले तथा स्वतंत्र शासक बन जाने का अवसर ढूढ़ें।

कासिम खां की इस हुक्म-उदूली से सलीम क्रोध, क्षोभ और परेशानी से भर गया, किन्तु उसने समझदारी से काम लिया। वह समझ गया कि इस वक्त कासिम खां को छेड़ना ठीक न होगा। वह खून का घूंट पीकर रह गया।

× × × ×

राजमहल की एक सुरंग में आज मशालों का प्रकाश सा दिखलायी पड़ रहा है। प्रकाश में लकड़ी की टिकटी में एक व्यक्ति को बंधा और जकड़ा हुआ हम स्पष्टरूप से देख सकते हैं। सामने की ओर लोहे की मजबूत शृंखला में जकड़ी हुई एक स्त्री खड़ी है। यह स्त्री रजिया है और टिकटी में बंधा हुआ व्यक्ति हबीब खां है। पास में नंगी तलवारों के साथ दो सैनिक पहरा दे रहे हैं।

थोड़ी देर में शाहजादा सलीम कई सैनिकों और पहरेदारों के साथ उस स्थान पर आ गये।

हबीब खां ने इन्हें देखा और डर के मारे उसके मुंह से एक चीख निकल गयी। उसने गिड़गिड़ा कर कहा 'हुजूर, अब मुआफ़ करो।'

गंभीरता के साथ स्फुट-स्वर में शाहजादे सलीम ने कहा 'धोखेबाज़ और बागी को सलीम कभी मुआफ़ नहीं कर सकता। चलो, इस बेईमान के कोड़े लगाओ।'

जल्लाद तलवार से अधिक पैने कोड़े को लिये हुए आगे बढ़ा। हबीब बिना कोड़ा खाये तड़प उठा।

वह चिल्लाया 'एक मरतबा मुआफी हुजूर—मुआफी—मुआफ़ी—'

और 'सड़ाक' से कोड़ा उसकी नंगी पीठ पर पड़ा। वह वेदना से चिल्ला पड़ा।

एक ठहाका लगा कर सलीम ने कहा 'बड़े खूबसूरत लग रहे हो खां साहब। इस वक्त में तुम्हें रजिया की आंखों से देख रहा हूं। हा...हा...हा...हा !'

'सड़ाक' दूसरा कोड़ा पड़ा। पीठ से रक्त की धार निकल कर बह चली। इस बार चीख मार कर बेहोश हो गया।

रजिया चीख पड़ी। रोते हुए बोली 'बेगुनाह को मौत के घाट उतार कर आपको क्या मिल जायगा। अब तो रहम कीजिये।'

फिर ज़ोर का ठहाका लगा कर सलीम ने कहा 'रहम का पाठ सलीम पढ़ा ही नहीं बेगम साहिबा। मुझे धोखा देने वालों के लिये सज़ाये मौत से कम और कोई सजा नहीं हो सकती।'

तड़प कर रजिया बोली 'यह बुजदिली है।'

रजिया की बात सुनी-अनसुनी करके सलीम ने ज़ोर से कहा 'लगाओ कोड़े।'

'सड़ाक' 'सड़ाक' 'सड़ाक' कोड़े पड़ने लगे। शरीर से मांस के टुकड़े कट-कट कर गिरने लगे। यह दृश्य न देख सकने के कारण रजिया ने आंखें मूंद लीं।

हबीब खां के प्राण पखेरू उड़ चुके थे। अब रजिया की ओर देखकर सलीम ने कहा 'अब तू अपने लिये किस तरह की मौत पसन्द करेगी ?'

रजिया का चेहरा पीला पड़ गया। सामने क्षत-विक्षत हबीब खां की लाश टिकटी में झूल रही थी। इस दृश्य को देख कर वह फिर बहोश हो गयी।

उसे होश में लाया गया। गिड़गिड़ा कर रजिया बोली 'मुझे मुआफ करें.....'

शाहजादा सलीम हंस कर बोला 'मुआफ़ करने का वक्त चला गया। अब तो सिर्फ मरने का तरीका चुनने की आजादी में तुम्हें दे सकता हूं।'

रजिया कांप गयी। शाहजादा गंभीर होकर सैनिकों से बोला 'देर करने की जरूरत नहीं है। इसके बदन में आग लगा दो। खेल जल्दी खत्म हो जाय।'

जीते जी रजिया को जला डालने की आज्ञा दी। भय और वेदना से रजिया का हृदय बैठने सा लगा।

मशाल आगे लेकर रजिया के वस्त्रों में आग लगा देने के लिये दो सैनिक आगे बढ़े। रजिया चिल्लाकर बेहोश हो गयी।

सैनिकों ने उसके कपड़ों में आग लगा दी। रजिया होली की तरह जलने लगी। शाहजादे ने हँसकर कहा 'यह शुरूआत है। इस मुल्क में बागियों को इस तरह जलकर मरना होगा। मैं महाराज मानसिंह की साजिश को तोड़-फोड़ कर रख दूंगा।'

सुन्दरी रंजिया जलकर भस्म हो गयी।

वह सुन्दरी जिसकी रूप-सुगन्ध ने एक दिन सारी दिल्ली को अपनी ओर आकृष्ट कर लिया था आज राजमहलों की क्रीड़ा की वस्तु होकर मुट्ठी भर राख के रूप में पृथ्वी के नीचे अज्ञात रूप में पड़ी हुयी है।

यह है महान शासकों की रंगीनियों का रक्त-रंजित इतिहास।

अभी राख बुझने भी न पायी थी कि एक सैनिक घबड़ाया सा दौड़ता हुआ आ पहुंचा और चिल्लाकर बोला 'गजब हो गया जहांपनाह। कासिम खां की फौज ने राज महल को चारों ओर से घेर लिया है।

शाहजादा क्षण भर खड़ा कुछ सोचता रहा फिर सुरंग में एक ओर घुस कर गायब हो गया।

(१८)

शाहजादा सलीम के विद्रोह-स्वरूप सारा अवध का प्रान्त स्वतंत्र हो गया। सलीम की फौजें आगरे की ओर बढ़ने का उपक्रम करने लगीं।

दिल्ली पर महाराज मानसिंह का कब्जा हो गया था अतएव सलीम की फौजें वहां प्रवेश न कर सकीं। सलीम आगरे पर कब्जा करने की फ़िकर में था। उधर मानसिंह की फौजें इलाहाबाद की तरफ बढ़ी चली आ रही थीं।

सलीम का गुप्तचर-विभाग आगरे में काम कर रहा था। अवसर पाकर उसके आदमियों ने एक दिन शिकार के बहाने शाहजादा खुसरो को जंगल में ले जाकर क़त्ल कर डाला। इन्हीं सब परेशानियों में पड़कर अकबर बीमार पड़ गया।

किन्तु महराज मानसिंह का कार्य जारी रहा। शाहजादे खुसरो के मर जाने के बाद उन्होंने उसके छोटे भाई को गद्दी पर बिठलाने का संकल्प कर लिया।

अकबर विचित्र परिस्थिति में पड़ गया। सलीम ने जो उसके विरुद्ध विद्रोह का रोड़ा खड़ा कर दिया था उससे उसके हृदय में गहरा धक्का लगा था। वह सलीम को किसी भी दशा में छोड़ने को तैयार न होता था। वह चाहता था कि एक बार सलीम किसी भी दशा में उसके पास आ जाय और वह अवश्य उसे क्षमा कर देगा। किन्तु सलीम अब उससे बहुत दूर था। अस्तु—

सम्राट अकबर रुग्णावस्था में सुनहरे पलंग पर लेटे हुए हैं और उसके मित्र, मंत्री और हितैषी आस-पास बैठे हुए चिन्ता में निमग्न हैं।

तभी हकीम जी ने औषध का प्याला सम्राट की ओर बढ़ाते हुए कहा 'मेरी यह दवा जहांपनाह को जरूर फायदा और राहत पहुंचायेगी।'

जर्जर और रुग्ण सम्राट ने एक बार चिकित्सक की ओर भेद भरी दृष्टि से देखा फिर आंख मूंद लीं।

सामन्त, दरबारी, हितैषी तथा संबंधी उस विशाल कक्ष में बैठे हुए देश में कला, साहित्य, शौर्य, प्रतिष्ठा तथा गौरव को आकाश तक ले जाने वाले प्रतापी अकबर के अस्त को देख रहे थे।

सहसा सम्राट ने धीरे से नेत्रों को खोला और पुतलियों को एक बार चारों ओर घुमा कर क्षीण-स्वर में कहा 'सलीम।'

सलीम का नाम सुन कर महाराज मानसिंह की चिन्ता बढ़ गयी; वे समझते थे कि सम्राट कदाचित् अब सलीम को भूल चुके हैं। वे बोले 'जहांपनाह, सलीम की कुछ खबर अभी तक नहीं आयी। हुक्म हो तो शाहजादे खुर्रम को बुलवा भेजूं ?'

सम्राट मौन पड़े रहे।

हकीम जी ने प्याले में दवा को उँडेलते हुए कहा 'जहांपनाह जरा तकलीफ करें।'

अकबर ने क्षण भर चुप रह कर कहा 'अभी मुझे मुआफ फरमायें हकीम साहब। वक्त आने पर मैं खुद दवा मांग लूंगा।'

हकीम ने एक बार महाराज मानसिंह की ओर देखा और प्याले को पास ही रक्खी हुयी खुशनुमा चौकी पर रखते हुए कहा 'जहांपनाह की जैसी मर्जी।'

अकबर ने लेटे ही लेटे कहा 'सलीम की जरूरत है मुझे महाराज मानसिंह। आखिर बागी को सजा तो मिलना ही चाहिए।'

महाराज मानसिंह का हृदय प्रसन्न हो उठा। अभिवादन करते हुए बोले 'जहांपनाह की ख्वाहिश ज़रूर पूरी की जायगी।'

सम्राट का चेहरा शोकांकित सा हो उठा था। थोड़ी देर में मानसिंह तथा सभी दरबारी उठ कर चले गये।

सम्राट ने आज्ञा दी 'शेर खां को हाजिर करो।

शेर खां यद्यपि थोड़े ही दिनों से अकबर का नौकर था, किन्तु उस पर सम्राट का अटूट विश्वास था।

शेर खां ने उपस्थित होकर अभिवादन किया।

कमरे में अकेले शेर खां को देख कर सम्राट ने धीरे से कहा 'मैं तुम पर यकीन करता हूं शेर खां।'

शेर खां ने फिर से आदाब बजाते हुये कहा 'जहांपनाह का मैं गुलाम हूं। मेरी रगों में भी मुगलों का खून बहता है। मैं कभी जहांपनाह के साथ दगा न करूंगा।'

कुछ सोच कर सम्राट ने कहा 'मुझे सलीम की जरूरत है खां साहब। क्या तुम मेरा यह काम कर सकोगे ?'

शेर खां सोच मे पड़ गया। सम्राट ने उसे चुप देखकर कहा 'क्या नहीं कर सकते शेर खां यह काम ? मुझे यकीन है कि तुम जरूर किसी तरकीब से सलीम को मेरे पास ला सकते हो।'

शेर खां बोला 'मैं कोशिश करूंगा। जहांपनाह के हुक्म को बजा लाने के लिए अपनी जान लड़ा दूंगा।'

सम्राट ने धीरे से लेटे ही लेटे सलीम के नाम एक छोटा सा पत्र लिखा और शेर खां को पकड़ा दिया।

शेर खां ने पत्र लेकर रख लिया। सम्राट ने कहा 'वक्त पड़ने पर तुम इसे इस्तेमाल कर सकते हो खां साहब।'

आदाब बजा कर शेर खां चला गया।

अकबर ने लेट ही लेटे एक सांस ली और बोला 'महाराज मानसिंह को हाजिर करो।'

× × ×

अकबर की बीमारी का हाल सुनकर सलीम परेशान हो उठा। वह चाहता था कि सम्राट के जीते ही जी आगरे पर उसका कब्जा हो जाना जरूरी है।

उसकी फौजें तीव्र गति से आगरे की ओर बढ़ने लगीं। उसे आगरे के गुप्तचरों से नित्य-प्रति सम्राट, महाराज मानसिंह तथा उनके गुप्त षड़यंत्र का हाल मिल जाया करता था।

थोड़े ही दिनों में सलीम की विशाल सेना ने आगरे के निकट अपना डेरा आकर डाल दिया।

सलीम के सेनापति यार खां ने कहा 'इस जगह से हम आसानी के साथ आगरे पर हमला कर सकते हैं।'

उस समय शाहजादे के डेरे में यार खां के अतिरिक्त और कोई न था। शाहजाद सलीम ने कहा 'मगर मानसिंह की तरफ से कोई खास तैयारी नजर नहीं आती।'

सेनापति यार खां ने कहा 'दुश्मन गाफिल न होगा। हो सकता है यह भी उसकी कोई चाल हो।'

और तभी चोबदार ने आकर कहा 'जहांपनाह से कोई मिलना चाहता है।'

शाहजादे सलीम ने यार खां के मुंह की ओर देखा कुछ सोचकर सेनापति यार ख न कहा 'उसे लाकर पेश करो।'

सम्राट अकबर का भेजा हुआ कासिद शेर खां सामने आकर खड़ा हो गया।

लम्बा अभिवादन करते हुये शेर खां ने धीरे से कहा 'मैं जहांपनाह के हुक्म हाजिर हुआ हूं। जहांपनाह आखिरी वक्त शाहजादे साहब को देखना चाहते हैं।'

यार खां ने सिर हिलाकर किंचित मुस्कराते हुये कहा 'जहांपनाह आखिरी वक शाहजादे को देखना चाहते हैं या उसे गिरफ्तार करके मानसिंह के हवाले कर देना चाहं हैं ? सच कहो न खां साहब ?'

सलीम चुप था।

शेर खां ने फिर अभिवादन करते हुये कहा 'जहांपनाह की हालत अच्छी नहीं है वे बार-बार शाहजादे का नाम लेकर चौंक पड़ते हैं।'

सेनापति यार खां ने स्फुट स्वर में कहा 'लौट जाओ शेर खां, अगर तुम मर नहीं चाहते। जहांपनाह से कह देना कि अब शाहजादा उनके या मानसिंह की साजिश फंस नहीं सकता। अगर खुदा ने चाहा तो दो-चार दिन के अंदर ही हम आकर उ तलवारों से सलाम करेंगे। अब आप जा सकते हैं खां साहब।'

शेर खां एक हलकी सी सांस लेकर थोड़ी देर चुप रहा फिर धीरे से एक पत्र निकाल कर शाहजादे की ओर बढ़ा दिया।

शाहजादे ने पत्र पढ़ा, और क्षण भर सोच कर बोला 'अच्छा खां साहब। मैं अब्बाजान से जरूर मिलूंगा।'

सेनापति यार खां बोल उठा 'और महाराज मानसिंह।'

शाहजादे का हाथ तलवार की मूंठ पर चला गया। वह वीरोचित भाव में आकर बोला 'शाहजादा सलीम मानसिंह से नहीं डरता।'

शेर खां ने आदाब किया और धीरे से डेरे के बाहर हो गया।

[१६]

अकबर की दशा गिरती ही चली जा रही थी। उसका विशाल-कक्ष चिकित्सकों, हितैषियो, मंत्रियों तथा सभा-सदों से भरा रहता था।

सिरहाने महाराज मानसिंह बैठे हुये थे। इतनी भीड़-भाड़ के होते हुये भी सन्नाटा था।

सहसा सम्राट अकबर ने करवट ली। हकीम ने प्रार्थना-भरे शब्दों में कहा 'हुजूर, दवा पी ले।'

अकबर ने शान्त भाव से उत्तर दिया 'जल्दी न कीजिये हकीम साहब। दवा पीने का भी वक्त आ जायगा।'

उसने फिर एक बार महाराज मानसिंह की ओर देखा। मानसिंह ने धीरे से कहा 'दवा पी लेने से जहांपनाह की तबियत ठीक ही होगी।'

अकबर के चेहरे पर अद्भुत प्रकार के भाव दिखलायी दिये। उसने कहा 'मैं इस वक्त दवा पीने की जरूरत नहीं समझ रहा हूं मानसिंह साहब। पहिले सलीम को मेरे सामने हाजिर किया जाय। मेरे खिलाफ बगावत करने वाला आजाद घूमे यह देख कर मैं इस दुनियां से कूच भी तो नहीं कर सकता।'

महाराज मानसिंह चुप खड़े रहे।

सम्राट ने अब कुछ स्फुट स्वर में कहा 'सलीम की जरूरत है मुझे दवा की नहीं महाराज मानसिंह।'

और तभी सभी की दृष्टि द्वार की ओर गयी। अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित योद्धा बना हुआ शाहजादा सलीम सम्राट अकबर के विशाल-कक्ष के द्वार पर खड़ा हुआ था।

उपस्थित सभासद और सामंत शाहजादे की प्रतिष्ठा के लिये उठने को उद्यत हुये किन्तु महाराज मानसिंह की त्योरियां देख कर ज्यों के त्यों बैठे रह गये।

महाराज मानसिंह के मुंह से निकला 'शाहजादे को बन्दी बनाओ।'

सलीम ने म्यान से तलवार निकाल ली। किसी का भी आगे बढ़ने का साहस न हुआ। सब लोग उसी प्रकार बैठे रहे।

अब सलीम की दृष्टि पलंग की ओर गयी। जिस पिता के मरने की प्रतीक्षा करते करते उसने ऊब कर बगावत का झंडा खड़ा कर दिया था उसे आज निर्बल, निश्चेष्ट एवं अन्तिम अवस्था में देख कर उसका हृदय रोने लगा। उसके नेत्रों में जल सा आ गया।

पिता ने भी देखा—सामने खड़ा है सलीम। यह क्या ? सदा रंगरेलियों में मस्त रहने वाला, कोमल, भावुक और ऐश-पसंद सलीम, आज योद्धा के वेश में ! खूब !!

सम्राट के चेहरे पर मुसकान सी दौड़ गयी। ममता को दबा करके धीरे से बोले 'आखिरी वक्त में क्या जहांपनाह से जंग करने आये हो सलीम ?'

सलीम ने क्षण भर तक कुछ सोचा और फिर सारे अस्त्र-शस्त्रों को उतार कर एक ओर फेंक दिया। उसने महाराज मानसिंह की ओर घृणापूर्ण दृष्टि से देखा।

तो फिर क्या यही मानसिंह उसके और उसके पिता की ममता के बीच दीवार सा बना खड़ा हुआ है ?

सलीम चुपचाप पिता के पास पलंग पर बैठ गया।

अकबर सहारे से उठा और तकिये पर बोझ डाल कर बैठ गया। सलीम नीच सिर किये बैठा हुआ था।

सन्नाटा सा छा गया। महाराज मानसिंह का चेहरा कभी पीला और कभी लाल हो रहा था।

अकबर ने कांपते हुये बायें हाथ से सलीम का दाहिना कान पकड़ा तथा दाहिने हाथ से उसके बायें गाल पर एक हलकी सी चपत लगाते हुये कहा 'क्यों बे शेखू ! इतना बदमाश हो गया।'

सलीम की आखों में आंसू आ चले थे। वह नीचा सिर किये ममता में बह गया था।

अकबर ने धीरे से सिरहाने रक्खा हुआ ताज उठाया और सलीम के सिर पर रख दिया।

सामन्तों की तलवारें खनखना उठीं, सभासदों के दोनों हाथ अभिवादन के ऊपर उठ गये।

'मुगल-सम्राट की जय हो' सामन्तों ने घोष किया। तलवारों से नये सम्राट की अभिवादन की क्रिया पूरी हो गयी।

सलीम ने खड़े होकर पिता का राजोचित अभिवादन किया।

अकबर ने कहा 'आज मैं खुश हूं कि अल्लाह ने मेरी ख्वाहिश पूरी कर दी। जिसकी चीज थी उसी को सौंप कर मैंने अपना फर्ज पूरा कर दिया है। सलीम तुम पर खुदा का साया रहे।

और सम्राट शक्ति-हीन सा बिस्तर पर गिर गया। सलीम ने पिता के हाथ पर अपना हाथ फेरते हुये कहा 'मेरे लिये क्या हुक्म होता है अब्बाजान ?'

श्रान्त अकबर कुछ देर तक चुप रहा, फिर बोला 'हिन्दुस्तान की हुकूमत का बोझ मामूली बोझ नहीं है। रैय्यत की खिदमत ही कायग्राबी का वायस है। इंसाफ-पसंद होना हुकूमत का सबसे बड़ा फर्ज है।'

सलीम उसी प्रकार बैठा रहा। अकबर फिर धीरे से बोला 'दुनियां सादगी पर रीझती है सलीम। अगर हो सके तो आगरे से बहुत दूर—कहीं जमना के किनारे—पेड़ों और पत्तियों के झुरमुट में मेरी सीधी-सादी सी कब्र बनवा देना। याद रखना सलीम, उस पर किसी तरह की छत न हो जिससे लोगों की नजर उसपर पड़ सके। उसी एक ईंट की कब्र के नीचे ही अकबर की रूह आराम से सांस ले सकेगी। अकबर के सीने में जीवन भर मोम की सी लोच रही है, वह कभी संगमरमर के बोझ को बरदाश्त न कर सकेगा।'

सलीम चुपचाप सुन रहा था। शक्ति आते ही अकबर उठकर बैठ गया। सलीम ने पीठ के पीछे अपने हाथ लगा दिये।

अकबर ने हकीम की ओर भेदभरी दृष्टि से देखा और हलकी ही मुसकान के साथ कहा 'लाइये खाँ साहब, अब आपकी दवा पीने का भी वक्त आ गया है।'

हकीम कांप सा उठा। अकबर मुसकुराता हुआ बोला 'डरने की कोई बात नहीं है खां साहब। लाइये सामने रक्खा हुआ वह दवा का प्याला बढ़ाइये इधर।'

हकीम साहब ने गिड़गिड़ाते हुये कहा 'नहीं जहांपनाह मैं यह दवा आपको नहीं पिला सकता। मेरा कुसुर मुआफ हो, मैं बेगुनाह हूँ।'

अकबर सिर हिलाते हुए झट बोल पड़ा 'मैं जानता था कि इसमें वह क़ातिल जहर मिला हुआ है जो मौत के पहिले ही मुझे.....'

सलीम ने क्रोधपूर्ण दृष्टि से हकीम साहब की ओर देखा और कहा 'आपको यह मजाल ?'

अकबर ने सलीम की पीठ पर हाथ फेरते हुये कहा 'गुस्सा करने की बात नहीं है सलीम। मैंने उसी वक्त इस बात को समझ तथा देख लिया था जिस वक्त यह क़ातिल जहर खां साहब की जेब से निकल कर इस प्याले में आया था। खैर—प्याला जरा इधर बढ़ाना सलीम।'

सलीम ने चौकी से प्याला उठा कर पिता की ओर बढ़ा दिया।

गौर से औषध के रंग को देखते सम्राट ने कहा 'हकीम बेगुनाह है सलीम। अकबर की लम्बी उम्र ने ही आज यह नौबत ला दी है। आज मेरा काम पूरा हो गया है ....।'

और एकाएक अकबर ने वह छोटा सा प्याला ओठों से लगा कर खाली कर दिया।

सलीम चिल्लाया 'यह क्या किया अब्बाजान तुमने !'

अकबर के चेहरे पर संतोष की मुसकान थी।

× × ×

अकबर की मृत्यु के बाद शाहजादा सलीम जहांगीर की उपाधि धारण करके हिन्दुस्तान का सम्राट हो गया। षड़यंत्र विफल हो गया था। षड़यंत्रकारियों को बुरी तरह कुचला। महाराज मानसिंह तो सेनापति के नाते बच गये किन्तु अन्य षड़यंत्रकारियों को बुरी तरह कुचल कर मारा गया।

एक बहुत बड़ी सेना दिल्ली की ओर भेजी गयी तथा क़ासिम खां को जीवित पकड़ ...ाज्ञा दी गयी।

...ति क़ासिम खां ने अपने को स्वतंत्र घोषित कर दिया था, किन्तु जहांगीर ... दिन के अंदर दिल्ली पर अधिकार कर लिया। कासिम खां जीवित ...गया गया।

... ने सारे विद्रोहों को समूल नष्ट कर दिया अब वह शान्ति के साथ ... में लेकर गद्दी पर बैठा।

उसके हृदय में शान्ति न थी। वह मेहरुन्निसा को न भूल सका था। उसने ...ने का दृढ़ निश्चय कर लिया था।

...का सबसे बड़ा विश्वास-पात्र शेर खां था। शेर खां की मदद और कोशिश से ...न्दुस्तान का बादशाह हो सका था। उसने शेर खां को उच्च पद पर आसीन ...था उसे अतुल धन देकर अमीर बना दिया। गोपनीय बातों में वह शेर खां की सलाह लेता था।

सब प्रकार से सम्पन्न होकर भी शेरखां खुश न था। उसके चेहरे पर सदा उदासी ही बनी रहती थी।

जहांगीर ने कई बार इस बात को लक्ष्य करके कहा 'शेर खां, क्या तुम्हारी इस गैर मामूली उदासी की वजह मैं जान सकता हूँ ?'

शेरखां चुप रहा। जहांगीर ने कहा 'तुम दुनियां में मेरे लिये सबसे ज्यादा अज़ीज हो दोस्त। तुम्हारी फिकरों को रफा करना मेरा फर्ज है।'

शेरखां का मुंह खुला 'मेरी फिक्र रफ़ा करना शायद जहांपनाह के हाथ में नहीं है।'

और वह चुप हो गया।

तभी चोबदार ने सूचना दी 'एक जवान औरत जहांपनाह की खिदमत में हाजिर होना चाहती है।'

जहांगीर ने कुछ सोचकर कहा 'अच्छा, आने दो।'

शेरखां उठकर जाना चाहता था, किन्तु जहांगीर ने कहा 'ठहरो शेरखां, अभी तुम से कासिम खां के बारे में सलाह लेना है। उसको ऐसी सजा मिलना चाहिये जिससे सारी दुनियां इबरत ले सके।'

शेरखां चुपचाप बैठ गया।

थोड़ी ही देर में एक जवान औरत सम्राट जहांगीर के सामने आकर खड़ी हो गयी।

सम्राट के मुंह से निकला 'ओह, तुम !'

शेरखां की नजर भी उस पर पड़ी। वह चिल्ला उठा 'कौन ? मेरी लतीफा !'

औरत ने ग़ौर से शेरखां की ओर देखा और दौड़कर उससे चिपट गयी।'

'मेरे अब्बा'—

'मेरी लतीफा'—

जहांगीर आश्चर्य के साथ यह दृश्य देख रहा था क्योंकि लतीफा वही औरत थी जिसके यौवन का आनंद वह सफीना बीबी के मकान पर उठा चुका था तथा दुबारा उसे रजिया के कमरे में भी देख चुका था।

काफी देर तक लतीफा पिता के वक्षस्थल से चिपटी रही। उसे अलग करते हुये शेर खां ने कहा 'गुस्ताखी मुआफ़ हो जहांपनाह। यह मेरी बेटी लतीफ़ा है।'

सम्राट अन्य विचारों में गोते खा रहे थे।

और तभी शेरखां लतीफा से पूछ बैठा 'और दलिया कहां है लतीफा।'

लतीफ़ा ने करुण-दृष्टि से सम्राट जहांगीर की ओर देखा।
सम्राट कुछ समझ न सके।
लतीफ़ा ने कहा 'जहांपनाह ही दलिया का पता बता सकते हैं।'
आश्चर्य के साथ सम्राट के मुंह से निकला 'दलिया ? दलिया कौन ?
लतीफ़ा ने कहा 'दलिया नहीं रजिया।'
'रजिया—रजिया'—सम्राट के मुंह से सहसा निकल गया।
शेरखां प्रसन्न होकर बोला 'जहांपनाह वह मेरी बड़ी बेटी है।'
'रजिया—रजिया—रजिया' धीरे धीरे कई बार सम्राट के मुंह से निकला।
और वे चुप रह गये।
शेरखां और लतीफा सम्राट के मुंह की ओर गौर से देख रहे थे।

कासिम खां का क्या हुआ ? लतीफा और शेरखां के बीच सम्राट जहांगीर क्या ससझौता हुआ ? सफीना बीबी, मेहरुन्निसा, रशीद और फतेह खां आदि मनोरंजक और विस्तृत हाल

दिल्ली-रहस्य

(दूसरा भाग)

में देखने को मिलेगा।